ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 01 सितम्बर 2019

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 01 सितम्बर 2019 से 07 सितम्बर 2019

भाद्रपद शु. – 02 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 61, अंक 35, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

वेद मंत्रोच्चार के साथ डी.ए.वी कोटा में वृक्षारोपण

वृक्ष ईश्वर का दिया अनमोल उपहार हैं, जिससे हमें प्राणवायु मिलती है। इसलिए अधिकाधिक संख्या में वृक्षारोपण करना चाहिए। उक्त विचार डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के चैयरमेन पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी ने डी.ए.वी. कोटा में वृक्षारोपण के अवसर पर व्यक्त किए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री पूनम सूरी ने कहा 'आज ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या विकराल होती जा रही है। केवल वृक्ष लगाकर ही इनसे बचा जा सकता है। हमें अपने बच्चों में वृक्षारोपण के संस्कार अभी से डालने होंगे ताकि आने वाली पीढ़ियां भी हरी–भरी प्रकृति का आनंद ले सकें। गत वर्ष भी डी.ए.वी. के माध्यम से एक लाख पौधे लगाये गए। वृक्षारोपण की यह प्रकिया निरंतर चल रही है।'

इस अवसर पर आर्यसमाज जिला सभा कोटा के पूर्व प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने संबोधित करते हुए कहा कि वृक्षारोपण के माध्यम से हम प्रकृति से जुड़े। प्रकृति के साथ जुड़ाव से आंतरिक आनंद मिलता है।

वृक्षारोपण के इस अवसर पर वेदमंत्रोच्चार पूर्वक औषधीय पौधे लगाये गए। श्री पूनम सूरी ने रूद्राक्ष का पौधा व मणी सूरी ने अर्जुन का पौधा लगाया।

पौधा रोपण के इस कार्यकम में डी.ए.वी स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सरिता रंजन गौतम, इंदु तनेजा प्रिंसीपल जीयालाल कॉलेज अजमेर, अशोक शर्मा डी.ए.वी. जयपुर, कांति सिंह डी.ए.वी. गढ़ेपान, पल्लवी अरोड़ा प्रिंसीपल डी.ए.वी. हनुमानगढ़, एम.एल. पटौदी वाईस चैयरमेन एल.एम.सी. कोटा आदि उपस्थित रहे।

डी.ए.वी. आलमपुर में आयोजित हुआ 'वैदिक चेतना शिविर'

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आलमपुर जिला कांगड़ा हिमाचल प्रदेश में दस विभिन्न डी.ए.वी. विद्यालयों के छात्रों व शिक्षकों ने वैदिक चेतना शिविर में सहर्ष भाग लिया। इस शिविर में डी.ए.वी. पालमपुर, डी.ए.वी. हमीरपुर, डी.ए.वी. कांगू, डी.ए.वी. देहरा, डी.ए.वी. गोजू, डी.ए.वी. लठयाणि, डी.ए.वी. बनखंण्डी, डी.ए.वी. नगरोटा सूरियां, डी.ए.वी. त्यारा, डी.ए.वी. विद्यालय आलमपुर से छात्रों तथा अध्यापकों ने हर्षपूर्वक भाग लिया।

शिविर का उद्देश्य युवा आर्य बालकों को वैदिक मूल्यों से अवगत कर उनका सर्वांगीण विकास करना रहा। शिविर का संचालन दैनिक समय सारिणी के अुनसार किया गया। जिसमें विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए योगाभ्यास, व्यायाम, आसन, बौद्विक क्षमता बढ़ाने के लिए बौद्विक वैदिक चेतना पर सम्बोधन। प्रातः 5 बजे से रात्रि शयन तक भिन्न–भिन्न सत्रों का आयोजन किया गया।

शिविर का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया जिसमें कांगू, वनखण्डी, त्यारा तथा आलमपुर के प्रधानाचार्य सम्मिलित हुए।

शेष पृष्ठ 11 पर

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी ने मनाया रक्षा बन्धन श्रावणी पर्व

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षा बंधन का पावन पर्व माननीय श्री तिलक राज ऐरी, फिरोजपुर के मशहुर कृष्णा कैटर्ज एवं कैण्डल बुड़ के मालिक की अध्यक्षता में बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया।

दीप प्रज्ज्वलन के साथ रक्षाबंधन का कार्यक्रम आरंभ हुआ, इस अवसर पर आश्रम की बालिकाओं ने स्वागत एवं राखी गीत प्रस्तुत किए। आश्रम के बच्चों सहित आश्रम प्रांगण में स्थित दयानन्द मॉडल स्कूल तथा डी.डी.बी.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

बच्चों ने समूह नृत्य, फैन्सी ड्रेस, गिद्दा, योगासन एवं देशभक्ति के कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया।

15 अगस्त, के उपलक्ष्य में तिरंगा फहरा कर मुख्य अतिथि ने बच्चों को देश भक्ति की ओर आकर्षित किया।

प्रबंधक डॉ. सतनाम कौर ने अपने सम्बोधन में मुख्य अतिथि, उनके सहयोगी एवं सभी आए हुए मेहमानों का धन्यवाद किया और बताया की महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित यह बाल कल्याणकारी संस्था 1877 से अब तक लगभग 142 वर्षों से बच्चों की सेवा व पालन पोषण में निरंतर जुटा है।

वर्तमान में 110 बच्चे निःशुल्क जीवन सुविधाओं का लाभ प्राप्त कर अपना भविष्य निर्माण कर रहे हैं। भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, औषधि आदि का प्रबंध दानी सज्जनों द्वारा दिए गए दानराशी से ही संभव हो पा रहा है, सभी बच्चे अपनी योग्यता अनुसार स्कूल कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

प्रबन्धक एवं पंडित सतीश शर्मा, ने आर्य रत्न माननीय पूनम सूरी, पदम श्री सम्मान से अलंकृत, प्रधान तथा अन्य पदाधिकारियों का कोटी कोटी धन्यवाद किया जिनके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से यह आश्रम प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर है।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 01 सितम्बर 2019 से 07 सितम्बर 2019

वाणी के सलिल में स्नान

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैः, भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्।
मा मा प्रापत् पाप्मा मौत मृत्युः , अन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः।।

अथर्व17.1.28

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **आदित्यः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अहं**) मैं (**ऋतेन**) सत्य से (**च**) और (**सर्वैः**) सब (**ऋतुभिः**) ऋतुओं से (**गुप्तः**) रक्षितज [**होऊँ**], (**भूतेन**) अतीत से (**भव्येन च**) और भविष्यत् से (**गुप्तः**) रक्षित [**होऊँ**]। (**पाम्पा**) पाप (**मा**) मुझे (**मा**) मत (**प्रापत्**) प्राप्त हो, (**मा उत**) **न ही** (**मृत्युः**) मृत्यु [**प्राप्त हो**]। (**अहं**) मैं (**वाचः**) वेदवाणी के (**सलिलेन**) सलिल से, ज्ञानामृत से (**अन्तः दधे**) [स्वंय को] आच्छादित कर देता हूँ।

● मैं अ–सुरक्षा के सन्त्रास से व्याप्त इस जगत् में सर्वात्मना रक्षित रहना चाहता हूँ। पर रक्षा का उपाय क्या है? सहस्त्रों सैनिकों को अपने चारों ओर सन्नद्व करके भी मैं वैसी रक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, जैसी स्वयं नैतिक नियमों में बंधकर तथा आत्म–बल को जगाकर पा सकता हूँ। सर्वप्रथम मैं 'सत्य' से रक्षित होऊँ। मनुष्य बहुधा अपनी रक्षा के लिए 'असत्य' का अवलम्बन करता है। वह सोचता है कि असत्य कहकर मैं अपराध के दण्ड से बच जाऊँगा। पर असत्य छिपता नहीं। अपराधी को अपराध का दण्ड तो मिलता ही है, असत्य–भाषण का अतिरिक्त दण्ड भोगना पड़ता है। इसके विपरीत सत्य बोलकर अपना अपराध स्वीकार कर लेने पर वह क्षमा का पात्र हो जाता है। मैं ऋतुओं से भी रक्षित होऊँ। ग्रीष्म, बर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, छहों ऋतुएँ व्यवस्थित रूप से आकर प्रकृति के कार्य–कलाप का चारुता के साथ निर्वाह करती हैं। इन ऋतुओं से शिक्षा लेकर मैं भी अपने कार्य को यथासमय करने की आदत डालूँ, तो मैं भी रक्षित रह सकता हूँ। यदि मैं अपने राष्ट्र के उज्ज्वल अतीत से शिक्षा लेकर वर्तमान को उज्ज्वल करने का व्रत लूँ, तो अतीत भी मेरा रक्षक बन सकता है। उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करके उसे मूर्तरूप देने के प्रयास द्वारा 'भव्य' को भी मैं अपना रक्षक बना सकता हूँ।

पाप मुझे न प्राप्त हों। यदि मैं दृढ़ता धारण लूँ कि किसी भी अवस्था में पाप के वशीभूत नहीं होऊँगा, तो पाप सदा मुझसे दूर रहेगा। परिणामतः नैतिक दृष्टि से मैं सुरक्षित रहूँगा। मृत्यु भी मुझे न प्राप्त हो। यों तो जिसने जन्म लिया है वह मृत्यु से ग्रस्त होता ही है, किन्तु जब भी चाहे अकाल मृत्यु आकर हमें ग्रस ले तो हम सर्वथा असुरक्षित रहते हैं। अतः सुरक्षा के लिए अकाल मृत्यु से बचना आवश्यक है। अन्त में आत्मरक्षार्थ मैं वाणी के सलिल से, वेदवाणी के ज्ञानामृत से, स्वयं को अच्छादित करता हूँ। जैसे शीतल–पवित्र जल का पान और उसमें स्नान श्रम और सन्ताप को मिटाकर हमारी रक्षा करता है, वैसे ही वेदवाणी के पवित्र ज्ञान–सलिल में स्नान भी हमारे अज्ञान–मूलक दुःख–द्वन्द को हरकर हमारा रक्षक बनता है। अतः मैं वेदवाणी के निर्मल ज्ञान–सरोवर में डूबकी लगाता हूँ और सब भीतियों से रहित, सब अविद्याओं से मुक्त तथा सब कर्त्तव्य–बोधों से स्फूर्ति पाकर पूर्ण सुरक्षित हो जाता हूँ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

त्यागमयी देवियाँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

महात्मा आनन्द स्वामी ने देवी पद्मिनी पर कथा सुनाते हुए बताया कि भीमसिंह ने कहा ' तुम अग्नि के द्वारा स्वर्ग पहुँचोगी और मैं युद्ध–क्षेत्र में प्राण देकर तुम्हारे पास पहुँचूँगा।' पद्मिनी ने कहा 'प्रभो! तू अन्तर्यामी है। तू जानता है कि हम सब निष्पाप हैं। राक्षसी यवनों के अनाचारों से अपनी रक्षा हेतु हम अग्नि–देवता की शरण में जा रहे हैं।'

पहले पद्मिनी ज्वलन्त ज्वालाओं में कूदी और साथ ही 13 हज़ार राजपूत युवतियाँ। राजपूत योद्धा वीरांगनाओं के इस बलिदान को देखकर अलाउद्दीन की सेना पर टूट पड़े और अन्त में लड़ते–लड़ते शहीद हो गए। लगभग साढ़े छः सौ वर्ष बीत जाने के बाद भी पद्मिनी और उसकी सखियों को यवन सभ्यता के अत्याचार सहन करने पड़े थे। 1947 में 'थोहा खालसा' ग्राम (वर्तमान पाकिस्तान) पर लगभग दस हज़ार मुसलमानों ने आक्रमण किया। वहाँ के वासियों ने तीन दिन वीरता से उनका सामना किया।

अब आगे ...

पद्मिनी

यवनों ने सफेद झण्डा देखकर पूछा, 'क्या चाहते हो?'

उत्तर दिया गया, 'हम तीन दिन से प्यासे हैं, पानी ले आने दो।' पाकिस्तानियों ने कहा, 'पहले मुसलमान बनो, फिर पानी पी सकोगे।'

'अच्छा, देवियों और बच्चों ही को जल पीने के लिए कूप पर जाने दो।' ग्रामवासियों ने प्रार्थना की।

'बहुत अच्छा। केवल औरतें और बच्चे ही बाहर आएँ, कोई पुरुष न आए।' यवनों ने उत्तर दिया।

तब लगभग एक सौ देवियाँ और बच्चे 'थोहा खालसा' की पहाड़ी से नीचे उतरकर सरदार गुलाबसिंह एडवोकेट के कुएँ पर पहुँचे। इनके वहाँ पहुँचते ही चारों ओर से पाकिस्तानियों ने इन देवियों को घेर लिया। इन देवियों में ही सरदार गुलाबसिंह एडवोकेट की धर्मपत्नी श्रीमती लाजवन्ती भी थी। उसने कहा, 'शीघ्र जल पीकर लौट चलो।'

परन्तु उन्होंने सुना कि घेरा डाले हुए पाकिस्तानियों में से कितने ही व्यक्ति देवियों को संकेत कर रहे थे, 'वह मैं लूँगा, यह मैं लूँगा, वह तो मेरे ही योग्य है।'

श्रीमती लाजवन्ती ने देवियों से कहा, 'सुन रही हो जो प्रस्ताव किये जा रहे हैं?'

'हाँ माता जी, सुन रही हूँ।' देवियों ने उत्तर दिया।

लाजवन्ती ने पूछा, 'तो फिर क्या इच्छा है?'

'किसी प्रकार से हमारा धर्म और इज्जत बच जाये।'

लाजवन्ती ने कहा, 'तो सुनो! जैसे मैं कहूँ वैसे करती चलना।'

कुएँ से जल निकाला गया। सब देवियों ने मुँह–हाथ धोए और कूप की मुँडेर पर प्रभु–भजन करने लगीं।

पाकिस्तानी शोर मचाने लगे, 'क्या कर रही हो?' शीघ्र हमारे साथ चलो!'

श्रीमती लाजवन्ती ने कहा, 'वीरो! घबराओ नहीं, हम अभी चलते हैं।'

तब वे सब उठ खड़ी हुईं। इन देवियों के पिता, भाई, पति तथा दूसरे सम्बन्धी दूर खड़े सब–कुछ देख रहे थे। दूर से ही देवियों ने हाथ जोड़कर उनकी ओर देखते हुए बड़े गम्भीर स्वर में कहा, 'आज तक जो सेवा हो सकी, कर दी। जो भी त्रुटि रह गई हो, वह क्षमा कर देना। अब हम भगवान् की गोदी में जा रहे हैं।'

इतना कहा और सबसे पहले श्रीमती लाजवन्ती ने उस कूप में छलाँग लगा दी, और फिर धड़ाम–धड़ाम सब देवियाँ और बालक उसमें कूद पड़े। कूप में पहुँचते ही सब देवियाँ और बच्चे डूब गए। पाकिस्तानी उसी प्रकार हाथ मलते रह गए जिस प्रकार अलाउद्दीन पद्मिनी की चिता देखकर हाथ मलता रह गया था।

इस घटना के दसवें दिन मैं श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्रीमती शन्नो देवी, श्रीमती डॉक्टर शकुन्तला, श्रीमती भाग के साथ उस कुएँ पर पहुँचा। 'आर्य प्रादेशिक सभा' की ओर से पीड़ितों की सेवा–सहायता के लिए मैं रावलपिंडी पहुँचा हुआ था। वहीं से हम सब सेना की सहायता से 'थोहा खालसा' पहुँचे। जब शहीद देवियों के इस कूप पर पहुँचे, तो अत्यन्त दुर्गन्ध आ रही थी। देवियों के शव गलसंड़ रहे थे। नासिका बंद करके कुएँ के अंदर देखा तो देवियों के शव फूल चुके थे।

25 शव तो स्पष्ट गिने गए, शेष उनके नीचे थे। एक नन्हा–सा शिशु अपनी माता की छाती के साथ था, उसका शव भी फूल गया था। यह सारी घटना सुनाने के लिए एक युवक हमारे साथ था, जिसका विवाह हुए अभी एक मास भी नहीं बीता था, और जिसकी नव–विवाहिता पत्नी (कँवल या कमला) भी उन्हीं बलिदान देनेवाली

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

ऋषि दयानन्द की दार्शनिक दृष्टि

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

(प्राप्त अप्रकाशित रचनाओं में से)

सत्य यह है कि ऋषि दयानन्द के दर्शानिक विचारों पर बहुत कम ऊहापोह हुआ है। चिन्तकों और विचारकों ने एक धर्म–संशोधन तथा समाज–सुधारक के रूप में तो उनका नोटिस लिया, किन्तु उनके दार्शनिक विचारों पर चर्चा करने के लिए वे बहुत कम समय निकाल पाये। भारत के धर्म–तत्त्व के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ के प्रत्येक धर्माचार्य, धर्म–संशोधन तथा धर्म–प्रचारक ने किसी न किसी दर्शन का आधार लेकर अपने मत का प्रचार किया। जब आद्य शंकराचार्य ने अवैदिक जैन और बौद्ध मतों के विरुद्ध अपना अभियान चलाया, यहां तक कि शैव, शाक्त, सौर, गाणत्य, कापालिक आदि विभिन्न देवी–देवताओं को आराध्य मानने वाले सम्प्रदायों का तीव्र खण्डन किया तो उनके पास एक ब्रह्मवाद (अद्वैतवाद) रूपी प्रखर दार्शनिक अस्त्र था। आगे चलकर जब भक्तिमार्ग के प्रवर्तक आचार्यों ने ज्ञान की तुलना में भक्ति को वरियता देकर विभिन्न भक्ति सम्प्रदायों का प्रवर्तन किया तो उन्होंने भी ईश्वर, जीव, सृष्टि–रचना, मोक्ष आदि दार्शनिक विषयों को लेकर अपने–अपने विचारों के आधार पर विशिष्टाद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत तथा शुद्धाद्वैत आदि दर्शनिक मतों की स्थापना की।

निर्गुण सन्तों के दर्शन में यद्यपि किंचित् अस्पष्टता तथा धुंधलापन दिखाई पड़ता है तथापि उनमें से अधिकांश जीवेश्वर–एवय सिद्धांत को मान्यता देते हैं तथा ज्ञान और भक्ति को समान महत्त्व देकर त्याग, तितिक्षा, वैराग्य आदि के आचरण पर जोर देते हैं। निर्गुण सन्तों में विचार सहिष्णुता तथा ग्रहणशीलता विशेष रूप से दिखाई देती है, तभी तो वे अद्वैतवाद और भक्तिवाद जैसे वैदिक–पारम्परिक तत्त्वों को स्वीकार करने में भी कोई संकोच नहीं करते। सूफियों का प्रेम–तत्त्व तथा इस्लाम की एक अल्ला को लेकर कट्टरता भी सन्तों में दिखाई देती है। समसामयिक धर्माचार्यों में ब्रह्म समाज के आचार्यों का दार्शनिक मत सुस्पस्ट नहीं हो सका। इतना सत्य है कि ब्रह्म मत के संस्थापक दयानन्द दीर्घकाल तक परमात्मा की उपासना करते थे, मानो अपने आराध्य से सत्यपक्ष की विजय दिलाने की प्रार्थना करते हों। लोकहित के अपने सभी कार्यों और अनुष्ठानों में वे परमात्मा की उपासना करते थे, मानो अपने आराध्य से सत्यपक्ष की विजय दिलाने की प्रार्थना करते हों। लोकहित के अपने सभी कार्यों और अनुष्ठानों में व परमात्मा को अपना परम सहायक मानते थे।

भक्तिवाद का उदय और भक्तिसूत्रों की रचना

छः दर्शन शास्त्रों की तर्ज पर कालान्तर में नारद और शाण्डिल्य के नाम से भक्तिसूत्र रचे गये। इनमें सूत्रशैली में भक्ति तथा उसके आनुषंगिक प्रसंगों की विस्तृत मीमांसा प्रस्तुत की गई हैं। आचार्य शाण्डिल्य ने भक्ति को इस प्रकार परिभाषित किया है – **या परा अनुरक्तिः ईश्वरे सा भक्तिः।** अर्थात् परमात्मा के प्रति पराकोटी की अनुरक्ति (प्रेम) की भक्ति है। इन ग्रन्थों मे नवधा भक्ति का जो उल्लेख मिलता है उससे अनुमान होता है कि भक्तिसूत्रों की रचना उस युग में हुई थी जब पौराणिक मत का प्रचलन हो चुका था तथा जनता में प्रतिमा–पूजन, अवतारवाद आदि की धारणाएँ चल पड़ी थीं। इन ग्रन्थों में ब्रज गोपिकाओं आदि के सन्दर्भ दिये गये हैं, वे इन्हें पुराणों के परवर्ती काल का होना बताते हैं।

ऋषि दयानन्द ने परमात्मा की भक्ति की और व्यक्ति का मनोनिवेश करने वाला एक ग्रन्थ लिखा था–"आर्याभिविनय"। उनका विचार था चारों वेद संहिताओं में प्रत्येक से न्यून से न्यून पचास मन्त्रों को लेकर उनकी भगवद्भक्ति से ओतप्रोत भावपूर्ण व्याख्या की जाये। इस ग्रन्थ के प्रथम तथा द्वितीय प्रकाश (ऋग्वेद के 53 तथा यजुर्वेद के 55 मन्त्र युक्त) लिखे गये तथा छपे। अवशिष्ट साम तथा अथर्ववेद के विनय प्रधान मन्त्रों की व्याख्या वे नहीं लिख सके। यहाँ व्याख्यात मन्त्रों में परमात्मा की स्तुति है या प्रार्थना, इसका संकेत वे मन्त्रारम्भ में कर देते हैं। ग्रन्थारम्भ के स्वरचित श्लोकों में दयानन्द ने परमात्मा की भावपूर्ण स्तुति की है–

सर्वात्मा सच्चिदानन्दोऽनन्तो यो न्यायकृच्छुचिः।
भूयात्तमां सहायो नो दयालुः सर्वशक्तिमान्।।

अर्थात् जो परमात्मा सबका आत्मा, सत्, चित्, आनन्दस्वरूप, अनन्त, अज, न्याय करने वाला, निर्मल, सदा पवित्र, दयालु, सब सामर्थ्य वाला, हमारा ईष्टदेव है, वह हमको सहाय नित्य होवे।

साथ ही इन श्लोकों में वे यह संकेत देते हैं कि समस्त लोगों के हित तथा परमात्मा के ज्ञान के लिए वे मूल मन्त्रो के साथ–साथ उनका लोक–भाषा में व्याख्यान जनसाधारण को बोध कराने के लिए दे रहे हैं। दयानन्द की सम्मति में जो ब्रह्म विमल, सुखकारक, पूर्णकाम, तृप्त, जगत् में व्याप्त है वही वेदों से प्राप्य है, जिसके मन में इस ब्रह्म की प्रकटता (यथार्थ ज्ञान) है, वही मनुष्य ईश्वर के आनन्द का भागी है और वही सदैव सबसे अधिक सुखी है। ऐसे मनुष्य को धन्य मानना चाहिए। इन प्रास्ताविक श्लोकों से हमें दयानन्द के भक्तिवाद को समझने में सहायता मिलती है।

आर्याभिविनयम् की रचना केवल ईश्वर–भक्ति में लोगों को नियोजन करने के लिए ही की गई हो, ऐसी बात नहीं है। दयानन्द मध्यकाल के अनेक भक्तों की भाँति लोगों को भाग्यवाद तथा पुरुषार्थहीनता का पाठ पढ़ाने वाले नहीं थे। वे आर्यजनों में पुरूषार्थ, स्वदेश प्रेम तथा स्वातन्त्र्य लिप्सा के भावों को देखने के इच्छुक थे। यही कारण है कि आर्याभिविनय में एक ओर प्रभुभक्ति तथा अपने आराध्य के प्रति समर्पण की भावना दिखाई पड़ती है तो साथ ही उस 'राजाधिराज परमात्मा' से स्वराज्य तथा आर्यों (सत्पुरुषों) के अखण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य की याचना भी की गई है।

परमात्मा के प्रति दयानन्द की अनन्य प्रीति को देखना चाहें तो इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम व्याख्यात ऋग्वेद के मन्त्र–**'शं नो मित्रः शं वरुणः'** की व्याख्या के आरम्भ में परमात्मा के प्रति किये गये सम्बोधनों की छटा को देखें। यहाँ न्यूनातिन्यून सत्ताईस सम्बोधनों से दयानन्द ने अपने आराध्य परमात्म देव को सम्बोधित किया है। इनमें से अनेक सम्बोधनों में अनुप्रास प्रधान शब्दों का सौन्दर्य दर्शनीय है। यथा–विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद, विश्वासविलासक तथा निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव आदि। एक ओर यदि परमात्मा को **'सज्जन सुखद'** कहा तो साथ ही उसे 'दुष्ट–सुताड़नं' कहना भी वे नहीं भूले। दयानन्द की दृष्टि में परमात्मा चतुर्विध पुरुषार्थ के प्रदाता हैं– वे यदि धर्म सुप्रापक हैं तो अर्थ–सुसाधक तथा सुकामवर्द्धक भी हैं। मोक्षप्रदाता तो वो हैं ही–यदि वे 'राज्यविधायक' हैं 'शत्रु विनाशक' भी हैं। वस्तुतः इस ग्रन्थ को लिखकर दयानन्द ने भारत के भक्तिसिद्धान्तों में एक नूतन क्रान्ति की थी। अतः दयानन्द के भक्तिवाद का तात्त्विक अध्ययन अपेक्षित है।

इस ग्रन्थ के अन्य मन्त्रों के व्याख्यानों में उन्होंने परमात्मा के लिए जो सम्बोधनसूचक शब्द लिखे है, वे भी व्यंजनापूर्ण है। जब वे परमात्मा को 'महाराजाधिराज परमेश्वर' कहकर सम्बोधित करते हैं तो उनकी प्रार्थना होती है– "हमको साम्राज्याधिकारी सद्यः कीजिए।" उनकी विनय है कि हम सुनीतियुक्त हों जिससे कि हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े। (प्रार्थना सं. 17) **'वयं जयेम त्वया युजा'** (ऋ. 1/102/4) मन्त्र की व्याख्या के आरम्भ में उन्होंने परमात्मा को 'महाधनेश्वर' (मघवन्) तथा 'महाराजाधिराजेश्वर' कहकर पुकारा तथा उनसे चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य (रूपी) धन को प्राप्त कराने की प्रार्थना की। यह ईश्वरभक्त दयानन्द जी हैं जो परमात्मा से आर्यो के अखण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य की याचना करता है और साथ ही यह भी विनय करता है कि "अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हो।" (यजुर्वेद के मन्त्र 37/14–**'इषे पिन्वस्व ऊर्जे पिन्वस्व'** की व्याख्या में)

सामान्यतया भक्त अपने आराध्य से सुख, सौभाग्य, आरोग्य, धन–धान्य, कीर्ति, ऐश्वर्य आदि की याचना करता है। दयानन्द ने अपने परमात्मा से देश के लिए स्वराज्य तथा विशिष्टजनों (आर्यों) के साम्राज्य की याचना के प्रति जो सम्बोधन शब्द प्रयुक्त किये हैं वे भी विशिष्ट अर्थवत्ता लिये हैं। शतक्रतो (अनन्त कार्येश्वर), महाराजाधिराज परमेश्वर, सौम्य – सौख्य –प्रदेश्वर, सर्वविद्यामय आदि। वस्तुतः अनन्त गुणों वाले परमात्मा के सम्बोधन भी अनन्त ही होंगे।

परमात्मा की भक्ति कोई दिखाने की वस्तु नहीं है। मध्यकाल में मूर्तिपूजा, नाम–जप, तिलक, कण्ठी–छाप आदि साम्प्रदायिक प्रतीकों के धारण को भक्ति का साधन माना गया था। दयानन्द की सम्मति में परमात्मा के विविध गुणों के वाचक शब्दों के उल्लेख–पूर्वक उस परमसत्ता को नमन करना ही उसकी भक्ति का उत्कृष्ट रूप है। यदि हम उनके द्वारा रचित ग्रंथों के आरम्भ के मंगल–सूचक वाक्यों को देखें तो ज्ञात होगा कि स्वामी जी के लिए परमात्मा क्या है और कैसा है? यहाँ कुछ ऐसे ही ग्रन्थारम्भ में लिखे गये नमस्कार विधायक वाक्य दिये जा रहे हैं जो दयानन्द की दृष्टि में परमात्मा के स्वरूप तथा गुणों के ज्ञापक हैं।

1. **ओ३म् सच्चिदानन्देश्वराय नमः** ।– सत्यार्थप्रकाश
2. **ओ३म् तत्सत्पर ब्रह्मणे नमः।** – आर्याभिविनय
3. **ओ३म् ब्रह्मात्मने नमः** ।–वर्णोच्चारण शिक्षा
4. **ओ३म् खम्ब्रह्म** ।– काशी शास्त्रार्थ
5. **ओ३म् खम्ब्रह्म**।– सत्यधर्म विचार
6. गोकरुणानिधि में परमात्मा का स्मरण इस प्रकार किया गया है–

   'ओ३म् नमो विश्वम्भराय जगदीश्वराय'।

   इसमें दयानन्द का भाव यह है कि जो विश्वम्भर है वही तो गो आदि उपयोगी प्राणियों का भरण पोषण करने की भी सामर्थ्य रखता है। जो ईश्वर सर्वशक्तिमान् है उसमें गौ आदि की रक्षा करने का भी सामार्थ्य है।
7. **ओ३म् नमो निर्भ्रमाय जगदीश्वराय।**– अनुभ्रमोच्छेदन

   वेद के निर्भ्रान्त ज्ञान को देने वाला परमात्मा स्वयं निर्भ्रम है। ऐसे सार्थक नमस्कार वाक्य लेखक की परमात्मा के प्रति सच्ची भक्ति दर्शाते हैं।

3/5, शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

यज्ञ में मन्त्रोच्चारण क्यों करें

● महात्मा चैतन्यस्वामी

यज्ञ में वेद मन्त्रों का उच्चारण करने का अत्यधिक महत्त्व है। इससे न केवल वेद की रक्षा होती है बल्कि ध्वनि प्रदूषण भी दूर होता है। एक बार हम महाराष्ट्र के कार्यक्रम पर एक महाविद्यालय में प्रवचन करने गए तो वहाँ के प्राध्यापक ने हमें एक ऐसा यन्त्र बताया जिसमें हमें प्रत्यक्ष बताया गया कि अप–शब्द कहने से साउंड वेवज़ कैसे बाधित होती हैं और शान्ति–मन्त्र के द्वारा उन वेवज़ को सामान्य किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ के शिक्षा एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) द्वारा वेद–पाठ को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करते हुए इसे मानव सभ्यता की अलौकिक विरासत घोषित किया है। यूनेस्को द्वारा ही 7 नवम्बर, 2003 को पेरिस में गीत–संगीत की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित की गई। उसमें वेदपाठ की उपयोगिता को हृदय की शान्ति–सांत्वना के लिए सर्वोच्च प्रथम स्थान पर ठहराया गया है। मन्त्रों की ध्वनि–तरंगें (sound waves) शरीर व मन पर शक्तिशाली प्रभाव डालती हैं। ये तरंगें रोगों के उपचार में उसी प्रकार सहायता करती हैं, जिस प्रकार फिजियोथेरेपी में अल्ट्रासॉनिक या सुपरसॉनिक तरंगों द्वारा शरीर के दर्द वाले स्थानों का दर्द दूर किया जाता है। वेद मन्त्रों के उच्चारण से उत्पन्न स्वर लहरियों द्वारा शरीर के विभिन्न अव्यवों पर पड़ने वाले व्यापक लाभकारी प्रभाव के विषय में, महामहिम श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने हरिद्वार में उत्तरांचल संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में कहा– कि वेद मन्त्रों का मानव मस्तिष्क पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और इससे मस्तिष्क तरोजाता रहता है। उन्होंने उस समारोह में वेदमन्त्रों की सी. डी. भी मंच से चलवाकर सारे जन–समूह को वेदमन्त्रो को सुनने की प्रेरणा दी तथा स्वयं भी खड़े होकर वैदिक मन्त्र–पाठ सुनते रहे (आर्यजगत् 14–11–2004)। डिवाइन लाइफ सोसायिटी के स्वामी शिवानन्दजी के अनुसार–'वेद मन्त्रों का गायन रोगाणुओं को नष्ट कर देता है और कोशिकाओं व ऊतकों को अनुप्राणित करता है,उनमें नव–जीवन का संचार करता है। वेद मन्त्र सर्वोत्तम,सर्वाधिक शक्तिशाली रोगाणु रोधक और रोगाणुनाशक है (अर्थात् रोगों के किटाणुओं को रोकने और उन्हें मिटाने वाले हैं)। वेदमन्त्रों का गायन पराबैंगनी व आल्टरावायलेट किरणों से भी अधिक ताकत रखता है। प्रोफेसर मार्गन कहते हैं कि विभिन्न आवृत्तियों (तरंगों) और ओम् ध्वनि के उतार–चढ़ाव से पैदा होने वाली कम्पन क्रिया से मृत कोशिकाओं का पुनर्निमाण हो जाता है। रक्त विकार होने ही नहीं पाता। प्रो. हारबर्ट बेन्सन के अनुसार थोड़ी प्रार्थना और ओम् के उच्चारण से जानलेवा बीमारी एड्स के लक्षणों से राहत मिलती है तथा बांझपन के उपचार में दवा का काम करता है।

जहाँ आज वायु, जल एवं धरती आदि में प्रदूषण है वहीं ध्वनि–प्रदूषण भी आज एक समस्या बनता चला जा रहा है। वेद–मन्त्रों के उच्चारण से इस प्रदूषण को दूर किया जा सकता है। आज नासा आदि के वैज्ञानिक भी गायत्री–मन्त्र तथा ओम् की ध्वनि को अत्यधिक ऊर्जावान् मानने लगे हैं। नवभारत टाइम्स समाचार पत्र सितम्बर,2007 के अनुसार–'चीन का एक किसान अपनी पैदावार बढ़ाने के लिए पौधों को क्लासिकल म्यूजिक सुनाता था जिससे उसकी पैदावार सात प्रतिशत बढ़ गई। स्प्रिचुअलिटि से तनाव दूर होता है। कनाडा के शोधकर्त्ताओं के अनुसार म्यूजिकल से याददाश्त, सीखने की क्षमता तथा आईक्यू बढ़ जाते हैं। डॉ. आर.बी. धवन के अनुसार यह सत्य है कि मन्त्रोच्चारण से हमारे मन और दिमाग को अपार शक्ति मिलती है। अमेरिका की वैज्ञानिक डॉ. हावर्ड स्टिमुल ने अपने परीक्षण के दौरान यह पाया कि गायत्री मन्त्र के स्वर उच्चारण से एक सेकण्ड में 1,10,000 तरंगें उत्पन्न होती हैं जो दुर्भावनाओं को काफी हद तक शान्त कर देती हैं, हमारी शारीरिक कोशिकाएँ झंकृत होकर सम्पूर्ण शरीर में स्फूर्ति लाती हैं तथा हृदय एवं फेफड़े को मजबूत बनाती है। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि हिंसक लोगों के द्वारा जब निरीह पशुओं को मारा जाता है तो उन पशुओं की आह–रुदन आदि से वातावरण क्षुब्ध हो जाता है, वेद मन्त्रों की ध्वनि उस क्षुब्ध वातावरण को विशुद्ध बनाती है। यदि देखें तो मन्त्र–जाप भी एक तरह का मानसिक उपचार ही है। आजकल ध्वनि–चिकित्सा का प्रचलन हुआ है जिसे 'अल्टरासोनिक वेव्स ट्रीटमैंट' के नाम से जाना जाता है। यज्ञ में वेद मन्त्रों का विशिष्ट छन्द स्वर के नियत उच्चारण से ऐसी शब्द लहरें उत्पन्न कर देती हैं जिनसे न केवल आधि–व्याधियों का निवारण ही होता है, प्रत्युत सम्पूर्ण आकाश ऐसे विषाणुओं से मुक्त होकर स्वच्छ व हितकारी भी बनता है। यज्ञकुण्ड में श्रद्धापूर्वक डाली गई सामग्री जब अग्नि में जाकर सूक्ष्म रूप धारण करती है तब वह वैदिक मन्त्रों की ध्वनि से मिलकर वातावरण में व्याप्त हो जाती है। इसकी सूक्ष्म विद्युतीय तरंगें एक ओर वातावरण का परिशोधन करती हैं वहीं दूसरी ओर मानवीय मन में संव्याप्त ईर्ष्या, द्वेष, कुटिलता, पाप, अनीति, अत्याचार, वासना, तृष्णा आदि मानसिक विकारों, क्लेशों को दूर करती है। आत्मा को शुद्ध कर बलवान बनाती है। परमात्मा के सामीप्य का आनन्द प्राप्त कराती है। दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डल्यू सेल्वामूर्ति ने अपने शोधपत्र में लिखा है कि अग्निहोत्र (यज्ञ) के मन्त्रों का मनुष्य की फिजियोलॉजी तथा नर्वस सिस्टम तंत्रिका–तन्त्र पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसे उन्होंने न्यूरोफिजियोलॉजिकल प्रभाव की संज्ञा दी है। उन्होंने कहा कि अग्निहोत्र करने से शरीर का तापमान सामान्य से एक डिग्री सेल्सियस कम हो जाता है, इससे मानसिक शान्ति मिलती है, तनाव दूर होता है और मस्तिष्क विश्रान्ति की अवस्था में पहुँच जाता है, जिसे विज्ञानवेत्ता 'अल्फा स्टेट' के नाम से सम्बोधित करते हैं। हवनकुण्ड के चारों ओर बैठे याज्ञिकगण जब वेदपाठ करते हैं तो उससे स्वतः एक प्रकार का प्राणायाम होने लगता है। परिणामस्वरूप असीम सौरभ युक्त प्राणपद वायु वेद–पाठियों के फेफड़ों में भर जाती है और उन्हें निरोगी बना देती है। यज्ञ में जो आहुति डाली जाती है उसके मुख्यतः तीन भाग हो जाते हैं–एक तो राख के रूप में हवन–कुण्ड में रह जाता है, दूसरा सूक्ष्म होकर सूर्यादि को प्राप्त होता है और तीसरा भाग संस्काररूप में हमारे। सूक्ष्म शरीर को पवित्र करता है। मन्त्र शोधक संयत्र की तरह काम करता है, जैसे झाडू कमरे में स्थित कचरे को साफ करता है, वैसे ही मन्त्र हमारे अन्तःकरण में स्थित बाधक–तत्वों को दूर करने में सहयोग करते हैं।

महर्षि दयानन्दजी ने वेद–मन्त्र क्यों बोलने चाहिए इस सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर शैली में कहा है–'प्र. –होम करने का जो प्रयोजन है सो तो केवल होम से ही सिद्ध होता है फिर वहां वेदमन्त्रों को पढ़ने का क्या काम?

उ.–उनके पढ़ने का प्रयोजन कुछ और ही है।

प्र.–वह क्या?

उ.–जैसे हाथ से होम करते, आँख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे ही वाणी से वेदमन्त्रों को भी पढ़ते हैं। क्योंकि उनके पढ़ने में वेदों की रक्षा, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है तथा होम से जो जो फल होते हैं उनका स्मरण भी होता है। वेदमन्त्रों के बार बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं, और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाए, क्योंकि ईश्वर को प्रार्थनापूर्वक स्मरण करना ही सब कर्मों का आरंभ करना होता है। इसलिए वेदमन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। अतः सब उत्तम कर्म वेदमन्त्रों से ही करना उचित है।

प्र. –यज्ञ में वेदमन्त्रों को छोड़ कर दूसरे का पाठ करें तो क्या दोष है?

उ. –अन्य के पाठ में यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। ईश्वर के वचन से जो सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, वह अन्य के वचन से कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा भ्रान्तिरहित सत्य होता है वैसा अन्य का नहीं और जो कोई वेदों के अनुकूल अर्थात् आत्मा की शुद्धि, आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का बोध और उनकी शिक्षा से वेदों को यथावत् जानकर कहता है, उसका भी वचन सत्य ही होता है और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है, वह ठीक ठीक नहीं हो सकता। इससे यह निश्चय है कि जहाँ–जहाँ सत्य दीखता और सुनने में आता है, वहाँ–वहाँ वेदों में से ही फैला है, और जो जो मिथ्या है वह वेद से नहीं, किन्तु वह जीवों ही की कल्पना से प्रसिद्ध हुआ है। क्योंकि जो ईश्वरोक्त ग्रन्थ से सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, वह दूसरे से कभी नहीं हो सकता। इस विषय में मनु का प्रमाण है कि–

मनुजी से ऋषि लोग कहते हैं कि स्वयंभू जो सनातन वेद हैं, जिनमें असत्य कुछ भी नहीं,और जिनमें सब सत्य विद्याओं का विधान है, उसके अर्थ को जानने वाले केवल आप ही हैं। अर्थात् चार वर्ण, चार आश्रम, भूत, भविष्यत् और वर्तमान आदि की सब विद्या वेदों से ही प्रसिद्ध होती हैं। यह जो सनातन वेदशास्त्र है, वह सब विद्याओं के दान से सम्पूर्ण प्राणियों का धारण और सुखों को प्राप्त करता है, इस कारण से हम लोग उसको सर्वथा उत्तम मानते हैं और इसी प्रकार मानना भी चाहिए। क्योंकि सब जीवों के लिए सब सुखों का साधन यही है।'

अपने पूना प्रवचन में इस सम्बन्ध में महर्षि कहते हैं–'कोई–कोई ऐसी भी शंका करें कि वायु शुध्यर्थ यदि हवन है तो उसमें वेदमन्त्रों के पठन की क्या आवश्यकता है और होम करने में अमुक ही रीति की ईंटें रखकर अमुक ही प्रकार की वेदी बनावे, ऐसी विशेष योजना किस वास्ते चाहिए? इस शंका का समाधान यह है कि विशेष योजना के अनुकूल कोई भी बात किए बिना उससे विशेष कार्य नियमित समय पर प्राप्त नहीं होता। इसी तरह कच्ची ईंटों की चार अंगुल गहरी और सोलह अँगुल ऊँची गणित प्रमाण से वेदी बनाकर उनमें नियमित प्रमाण का ही मसाला लेकर प्रमाण से घृतादिक का हवन करने से, अल्प व्यय में अतिशय उष्णता उत्पन्न होती है और उष्णता के कारण वायु शुद्ध होकर जल परमाणु वायु में उड़ जाते हैं और इस उष्णता के कारण वायु का घर्षण होकर विद्युत् उत्पन्न होती है और मेघ – मण्डल में गड़गड़ाहट की आवाज उत्पन्न होती है, इस प्रकार हवन की विशेष योजना के कारण विशेष उष्णता उत्पन्न होकर विशेष वृष्टि उत्पन्न होती है। अब गड़गड़ाहट अर्थात् इन्द्र–वज्र–संघात जन्य शब्द वर्णन किया हुआ है। इसका सच्चा अर्थ यह है कि इन्द्र अर्थात् सूर्य और

सूर्य की उष्णता के कारण विद्युत् और मेघ गर्जनादि कार्य होते हैं। अब होम समय में वेद (मन्त्रों का) पठन किसलिए है यह पूछा था, तो इसका उत्तर यह है कि दो काम यदि एक ही समय में हो सकते हों तो उन्हें करना चाहिए, ऐसा उद्देश्य कर प्राचीन आर्य लोगों ने जब हाथों को होमादिक द्रव्यों की व्यवस्था करने में लगाया, तब मुँह खाली न रहे,परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना मुँह से होती रहे, इसलिए पहले के ऋषि लोग वेद मन्त्र बोलते थे। इसके लिए ब्राह्मण लोगों ने वेद कण्ठस्थ आज तक किया, इसलिए वेद विद्या भी अबलों बनी रही है। फिर यह भी था कि वेदपाठ करने से परमेश्वर की भक्ति होती थी, जिससे विचार शक्ति भी उत्पन्न होती थी। **त्रातारमिन्द्रमविताऽमिद्रं हवे–हवे।** दूसरा ऐसा विचार है कि जो हाथों से प्रयोग होता है उसके जो मन्त्र उस समय कहे जाते हैं, उससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता, इससे मन्त्रोच्चार कर्म के उद्देश्य से नहीं होता, किन्तु परमेश्वर की स्तुति मुँह से होती रहे यही प्रधान उद्देश्य है और कोई मन्त्र ऐसे भी हैं जिनके लाभ कहे गए हैं। सारांश यह है कि वेद मन्त्रों को कहने से वेद की रक्षा ही मुख्य प्रयोजन है।'

अथर्ववेद में (11–7–5 से 12) बताया गया है कि समस्त यज्ञों के अधिष्ठाता परमपिता परमेश्वर ही हैं–'ऋग् साम यजुः' रूप त्रिविध मन्त्र उद्गीथादि पाँचों सामभक्तियाँ उस उच्छिष्ट में ही आश्रित हैं। यज्ञ–समृद्धि के लिए मैं भी इनको धारण करूँ। ऐन्द्राग्र, पावमान, महानाम्री व महाव्रत आदि यज्ञ के सब अंग उच्छिष्ट प्रभु में ही आश्रित हैं। राजसूय आदि सब यज्ञ उच्छिष्माण प्रभु में ही आश्रित हैं।' अग्न्याधेय, दीक्षा, कामप्र, छन्दस्, उत्सन्न, यज्ञ व सत्रों' के आश्रय, अग्निहोत्र आदि सब कर्मों का आधार वे प्रभु ही हैं।' एकरात्र, द्विरात्र' आदि सामयागों का उपदेश प्रभु ही देते हैं। सब यज्ञों के सूक्ष्मरूप ज्ञान के साथ प्रभु में ही आश्रित हैं। अमृत प्राप्त कराने वाले चतूरात्र आदि सब सोमयाग प्रभु द्वारा ही प्रार्दुभूत किए गए हैं। 'प्रतीहार, निधन, विश्वजित्, अभिजित्, साह्न, अतिरात्र, द्वादशाह' आदि यज्ञ प्रभु में आश्रित हैं। अथर्ववेद (7–54–1) में भी ऋग्वेद व सामवेद से कर्मों को करने का वर्णन मिलता है। अथर्व. (19–1) में ही आया है कि यज्ञ की वाणी को बढ़ाते हुए अर्थात् मन्त्रोच्चार के साथ हम हवि से पूर्ण करें। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि मन्त्र बोलकर हवि से यज्ञ करना चाहिए।

यज्ञों का अर्थ जानने के लिए तीन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–मन्त्रों का अर्थ, यज्ञ की प्रक्रिया और मन्त्रार्थ और क्रिया का परस्पर सम्बन्ध। विनियोग पर विचार करते समय मीमांसा ने इसके कुछ मौलिक आधार रखे हैं। वे आधार हैं–श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान और समाख्या। 'विनियोग का अर्थ तालमेल बैठाना व निश्चितीकरण है। किस मन्त्र के साथ क्या क्रिया व कर्म किया जाए इसका तालमेल बिठाना विनियोग है। इस विज्ञान में मन्त्र के अर्थ और यज्ञ कर्मों की संगति देखकर निश्चय किया जाता है। यह विज्ञान वस्तुतः वेद के छः अंगों में एक अंग है। इसी का नाम 'कल्प' है। वेदज्ञ ऋषियों ने जो क्रान्तदर्शी और साक्षात्कृद्धर्मा थे, मन्त्रों का सम्बन्ध उनकी भिन्न–भिन्न क्रियाओं के साथ जोड़ा। कल्प का अर्थ साधारणतया लोग कल्पना करते हैं। परन्तु यह कल्पना इतनी सरल नहीं, यह समर्थ कल्पना होती है और यज्ञ एवं कर्मकाण्ड की समृद्धि के लिए और रूप–समृद्धि के लिए होती है। जिस क्रिया के बताने में मन्त्र समर्थ है और उसका अर्थ मेल खाता है उसी के साथ यह कल्पना होती है। इस प्रकार का विनियोग–विज्ञान जो निकाला गया उसी का नाम कल्प है। ऋषियों ने वेद मन्त्रों का अनुसंधान करके ही इस शास्त्र को जन्म दिया। इस अनुसंधान का सुसंगत प्रकार है। वह यह है कि यज्ञ प्रक्रिया के अनुसार वेद मन्त्रों का अर्थ कर उसे कर्म से सम्बन्ध जोड़ने में वेद वाणी का अर्थ भी उसी ढंग पर किया जाता है।' (वैदिक यज्ञदर्शन).

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी अपने वेदभाष्य के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए विनियोग के सम्बन्ध में लिखते हैं (ऋ. भा. भू. प्रतिज्ञा विषय)–'इस वेदभाष्य में शब्द और उनके अर्थ द्वारा कर्मकाण्ड का वर्णन करेंगे। परन्तु कर्मकाण्ड में लगाए हुए वेदमन्त्रों में से जहाँ–जहाँ जो जो कर्म अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध के अन्त–पर्यन्त करने चाहिए, उनका वर्णन यहाँ नहीं किया जाएगा। क्योंकि उनके अनुष्ठान् का यथार्थ विनियोग ऐतरेय शतपथादि ब्राह्मण, पूर्वमीमांसा, श्रौत और गृहसूत्रादिकों में कहा हुआ है। उसी को फिर कहने से पिसे हुए को पिसने के समतुल्य अल्पज्ञ पुरुषों के लेख के समान दोष इस भाष्य में भी आ जा सकता है। इसलिए जो जो कर्मकाण्ड वेदानुकूल युक्तिप्रमाणसिद्ध है, उसी को मानना योग्य है, अयुक्त को नहीं।' 'इस भाष्य में पद पद का अर्थ पृथक् पृथक् क्रम से लिखा जाएगा कि जिससे नवीन टीकाकारों के लेख से जो वेदों में अनेक दोषों की कल्पना की गई है, उन सबकी निवृत्ति होकर उनके सत्य अर्थों का प्रकाश हो जाएगा तथा जो जो सायण, माधव, महीधर और अँग्रेज़ी व अन्य भाषा में उलथे व भाष्य किए जाते व किए गए हैं, तथा जो जो देशान्तर भाषाओं में टीका है उन अनर्थ व्याख्यानों का निवारण होकर मनुष्यों को वेदों के सत्य अर्थों के देखने के अत्यन्त सुख लाभ पहुँचेगा। क्योंकि बिना सत्यार्थ प्रकाश के देखे मनुष्य की भ्रमनिवृत्ति कभी नहीं हो सकती।। 'निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कर्मकाण्ड परक अधियाज्ञिक अर्थ उन्हें स्वीकार है। उन्होंने मन्त्रों का पारमार्थिक और व्यवहारिक अर्थ किया है मगर साथ ही यह तथ्य प्रस्तुत किया है कि ईश्वर परक अर्थ प्रत्येक मन्त्र का आवश्यक है उसका अत्यन्त त्याग संभव नहीं। महर्षिजी ने विनियोग को स्वीकार किया है मगर वह युक्तिसिद्ध हो, वेदानुमोदित हो और मन्त्रार्थ के अनुसार हो।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (वेदविषयविचारः) में महर्षि जी एक प्रश्न उठाया–'यज्ञ में देवता शब्द से किसका ग्रहण होता है? इसका उत्तर दिया–जो–जो वेद में कहे हैं, उन्हीं का ग्रहण होता है, इसमें यह यजुर्वेद का प्रमाण है कि (अग्निर्देवः) कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञक्रिया में मुख्य करके देवता शब्द से वेदमन्त्रों का ही ग्रहण करते हैं, क्योंकि जो गायत्र्यादि छन्द हैं वे ही देवता कहाते हैं और इन वेद मन्त्रों से ही सब विद्याओं का प्रकाश भी होता है। इसमें यह कारण है कि जिन जिन मन्त्रों में अग्नि आदि शब्द हैं, उन–उन मन्त्रों का और उन उन शब्दों के अर्थों का अग्नि आदि देवता नामों से ग्रहण होता है। मन्त्रों का देवता नाम इसलिए है कि उन्हीं से सब अर्थों का यथावत् प्रकाश होता है।"(कर्म सं.) वेदमन्त्रों करके अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त सब यज्ञों की शिल्पविद्या और उनके साधनों की सम्पत्ति अर्थात् प्राप्ति होती, और कर्मकाण्ड को लेकर मोक्षपर्यन्त सुख मिलता है, इसी से उनका नाम देवता है। (यथातो.) देवता उनको कहते हैं कि जिनके गुणों का कथन किया जाए, अर्थात् जो जो संज्ञा जिन जिन मन्त्रों में जिस जिस अर्थ की होती है उन उन मन्त्रों का वही देवता है। जैसे 'अग्निदूतं' इस मन्त्र में अग्नि शब्द चिह्न है, यहाँ इसी मन्त्र को अग्नि देवता जानना चाहिए। ऐसे ही जहाँ–जहाँ मन्त्रों में जिस जिस शब्द का उल्लेख है, वहाँ–वहाँ उस उस मन्त्र को ही देवता समझना होता है। इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिए। इसलिए देवता शब्द से जिस जिस गुण से जो जो अर्थ लिए जाते हैं, व निरुक्त और ब्राह्मणादि ग्रन्थों में अच्छी प्रकार लिखा है। इसमें यह कारण है कि ईश्वर ने जिस जिस अर्थ को जिस जिस नाम से वेदों में उपदेश किया है, उस उस नाम वाले मन्त्रों से उन्हीं अर्थों को जानना होता है। सो वे मन्त्र तीन प्रकार के हैं। उन में से कई एक परोक्ष अर्थात् अप्रत्यक्ष अर्थ के कई एक प्रत्यक्ष अर्थात् प्रसिद्ध अर्थ के, और कई एक आध्यात्मिक अर्थात् जीव, परमेश्वर और सब पदार्थों के कार्य कारण के प्रतिपादन करने वाले हैं। इससे क्या आया कि त्रिकालस्थ जितने पदार्थ और विद्या हैं, उनके विधान करने वाले मन्त्र ही हैं। इसी कारण से इनका नाम देवता है।'' जिन जिन मन्त्रों में सामान्य अर्थात् जहाँ–जहाँ किसी विशेष अर्थ का नाम प्रसिद्ध नहीं दीख पड़ता, वहाँ–वहाँ यज्ञ आदि को देवता जानना होता है। (अग्निमीळे.) इस मन्त्र के भाष्य में जो तीन प्रकार का यज्ञ लिखा है, अर्थात् एक तो अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त, दूसरा प्रकृति से लेकर पृथिवी पर्यन्त जगत् का रचनरूप तथा शिल्पविद्या, और तीसरा सत्संग आदि से जो विज्ञान और योगरूप यज्ञ है, ये उन उन मन्त्रों के देवता जानना चाहिएँ। जिनसे यह यज्ञ सिद्ध होता है, वे यज्ञांग भी उन मन्त्रों के देवता हैं और जो इनसे भिन्न मन्त्र हैं उनका प्रजापत्य अर्थात् परमेश्वर ही देवता है। जो मन्त्र मनुष्यों का प्रतिपादन करते हैं, उनके मनुष्य देवता हैं। इसमें बहुत प्रकार के विकल्प हैं कि कहीं पूर्वोक्त देवता कहाते हैं, कहीं यज्ञादि कर्म, कहीं माता, कहीं पिता, कहीं विद्वान्, कहीं अतिथि और कहीं आचार्य देव कहाते हैं। परन्तु इसमें इतना भेद है कि यज्ञ में मन्त्र और परमेश्वर को ही देव मानते हैं। जो जो गायत्र्यादि छन्दों से युक्त वेदों के मन्त्र, उन्हीं में ईश्वर की आज्ञा, यज्ञ और उनके अंग अर्थात् साधन, प्रजापति जो परमेश्वर, नर जो मनुष्य, काम, विद्वान्, अतिथि, माता, पिता और आचार्य ये अपने अपने दिव्य गुणों से ही देवता कहाते हैं। परन्तु यज्ञ में तो वेदों के मन्त्र और ईश्वर को ही देवता माना है।'

यजुर्वेद भाष्य में महर्षिजी लिखते हैं– 'मनुष्य लोग यज्ञ में जो आहुति देते हैं, वह वायु के साथ मेघमण्डल में जाकर सूर्य से खिंचे हुए जल को शुद्ध करती है, फिर वहाँ से वह जल पृथिवी में आकर औषधियों को पुष्ट करता है। वह उक्त आहुति वेद मन्त्रों से ही करनी चाहिए, क्योंकि उसके फल को जानने में नित्य श्रद्धा उत्पन्न हो। (यजु. 2–16)" ।हे मनुष्यो! तुम लोगों को वेदमन्त्रों के बिना पढ़े और उनके अर्थों के बिना जाने यज्ञ का अनुष्ठान व सुखरूप फल को प्राप्त होना और जो शुभ गुणयुक्त सुखकारी अन्न जल और वायु आदि पदार्थ हैं, उनको शुद्ध नहीं कर सकते। इससे यह तीन प्रकार के यज्ञ की सिद्धि यत्नपूर्वक सम्पादन करके सदा सुख ही में रहना चाहिए और जो इस पृथिवी में वायु जल तथा औषधियों को दूषित करने वाले दुर्गन्ध अपगुण तथा दुष्ट मनुष्य हैं वे सर्वदा निवारण करने चाहिएँ।। सब मनुष्यों को जैसे यह जगदीश्वर वस्तु–वस्तु में स्थित तथा वेद के मन्त्र–मन्त्र में प्रतिपादित और सेवन करने के योग्य है, वैसे ही यह यज्ञ वेद के प्रति मन्त्र से अच्छी प्रकार सिद्ध, प्रतिपादित विद्वानों ने सेवित किया हुआ सब प्राणियों के लिए पदार्थ–पदार्थ में पराक्रम और बल के पहुँचाने के योग्य होता है। (यजु. 1–27,30)'

महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर,
जिला मण्डी, (हि. प्र.)–175018
मो. 9418053092

देश की आज़ादी और आर्यसमाज

● मनमोहन कुमार आर्य

सृष्टि के आदि काल से महाभारत काल तक भारत का सारी दुनिया पर चक्रवर्ती राज्य रहा है। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भी प्रायः पूरे विश्व के राजा आये थे और उन्होंने युधिष्ठिर को अपना नेता व चकवर्ती राजा स्वीकार किया था और उनको अपने अपने देश की मूल्यवान वस्तुयें भेंट में दी थीं। महाभारत युद्ध के कारण भारत का पतन हुआ। सबसे बड़ा पतन वेदों के ज्ञान व विज्ञान का अध्ययन–अध्यापन व प्रचार बन्द हो गया जिससे भावी देशवासी अज्ञानी व अल्पज्ञानी होकर आपस में ही विवाद करने लगे। इससे देश में छोटे–छोटे राज्य अथवा रिसायतें अस्तित्व में आईं। एक बार वेदज्ञान के विलुप्त होने पर उसको पुनः प्राप्त करना व जन–जन तक उसका प्रचार व उससे अवगत कराना सरल कार्य नहीं था। अतः देश की भावनात्मक एकता भी वेदज्ञान के लोप होने से भंग होना आरम्भ हो गयी। इसका परिणाम था कि समय के साथ–साथ देश में अविद्यायुक्त मत उत्पन्न होना आरम्भ हो गये। इन मतों ने अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर करने के स्थान पर स्वमेव नये–नये अन्धविश्वासों व कुपरम्पराओं को जन्म दिया। समय के साथ–साथ अविद्यायुक्त मत–मतान्तरों की संख्या में वृद्धि होती गई और देश कमज़ोर होता रहा। आवश्यकता तो धर्म व मतों की अविद्या को दूर करने का था परन्तु मत–मतान्तरों ने यह भ्रान्ति पाल ली की उनकी सभी मान्यतायें पूर्णतया सत्य पर आधारित हैं। उन पर विचार व उनमें संशोधन की आवश्यकता ही नहीं है। **सभी मत अपने विरोधी मतों को बुरा कहते रहे परन्तु अपने मत की अविद्यायुक्त बातों को दूर करने का किसी ने प्रयत्न नहीं किया।**

भारत से बाहर भी महाभारत काल के बाद मतों का आविर्भाव हुआ जिनमें अविद्या विद्यमान थी परन्तु किसी मत व उसके आचार्य ने अविद्या को जानने व पहचानने तथा उसे दूर करने की प्रक्रिया को अपनाया हो, इसका उदहारण व प्रमाण नहीं मिलता। ऋषि दयानन्द ने मत–मतान्तरों की अविद्या व उससे मनुष्य समुदाय को होने वाली हानियों पर विचार किया और उसे अपने अमर ग्रन्थ **'सत्यार्थ–प्रकाश'** में स्थान दिया है। इस कारण सत्यार्थप्रकाश अविद्या को जानने व उसके निवारण के उपायों को बताने का एक प्रमुख साधन बन गया है। **सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करके देश–देशान्तर का कोई भी मनुष्य मत–मतान्तरों की अविद्या सहित विद्या को जान सकता है और उसका पालन करते हुए विद्या से प्राप्त होने वाले अमृत, मोक्ष व परमानन्द को प्राप्त कर सकता है।** इस **दृष्टि से सत्यार्थप्रकाश संसार का सबसे उत्तम व महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।** सभी लोगों को इस ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिये और इससे लाभ उठाना चाहिये। संसार में सत्य से बढ़कर कोई भी उत्तम व मूल्यवान पदार्थ नहीं है और असत्य से घटिया, निकृष्ट तथा मनुष्य जीवन को हानि पहुँचाने वाला पदार्थ नहीं है। मनुष्य के जन्म–जन्मान्तरों में दुःख का साधन असत्य व तद्जनित पाप कर्म ही होते हैं, यह यथार्थ ज्ञान सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर इसके अध्येता को होता है। सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होने वाला ज्ञान वेदों का ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में इस सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान ईश्वर ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया था।

ईसा की 19वीं शताब्दी के आरम्भ में देश से वेदों का ज्ञान प्रायः विलुप्त हो गया था। आज हम जिस गायत्री मन्त्र का गान करते हैं और उसका अर्थ भी सर्वसुलभ है, उस मन्त्र व उसके अर्थ को कोई जानता ही नहीं था। **यह सब आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द की देन है।** ऋषि दयानन्द का जन्म दिनांक 12–2–1825 को गुजरात के मौरवी नगर के ग्राम टंकारा में एक पौराणिक शिवभक्त पिता के परिवार में हुआ था। आयु के चौदहवें वर्ष में उन्हें मूर्तिपूजा से जुड़ी अलौकिक व अन्धविश्वासों से युक्त बातों की असत्यता के दर्शन हुए थे। **उन्होंने मूर्तिपूजा छोड़कर सच्चे शिव व ईश्वर की खोज आरम्भ कर दी थी। घर में बहिन और चाचा की मृत्यु से उन्हें वैराग्य हो गया था। अतः उन्होंने ईश्वर व मृत्यु की औषधि की खोज में अपने घर व परिवार का त्याग कर दिया और देश भर में घूम कर साधु–संन्यासी–योगियों व धर्मज्ञानियों की शरण में ज्ञानप्राप्ति हेतु गये। वह उनसे प्रश्नोत्तर करते रहे और उनसे सत्य को जानने का प्रयास करते रहे।** इस बीच उन्हें दो सच्चे योग गुरु मिले जिनसे योग सीख कर और योग का अभ्यास कर उन्होंने योग की अन्तिम सीढ़ी **'समाधि'** का भी साक्षात अनुभव कर ईश्वर का प्रत्यक्ष किया। इस उच्च योग्यता को प्राप्त करने पर भी ऋषि दयानन्द की तृप्ति नहीं हुई। वह और अधिक विद्या प्राप्त कर अपनी आत्मा को ज्ञान से आलोकित करना चाहते थे। **स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से ऋषि दयानन्द सन् 1860 में मथुरा में स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी के पास अध्ययन के लिये पहुँचे तथा उनसे अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त,** उपनिषद, दर्शन, वेद आदि का ज्ञान **प्राप्त कर ज्ञान की उच्चतम स्थिति को प्राप्त किया। तीन वर्ष में अपनी विद्या को पूरा करके गुरु दक्षिणा के अवसर पर उन्हें गुरुजी ने समाज व देश से अविद्या दूर कर विद्या का प्रचार व प्रकाश करने की प्रेरणा की। दयानन्द जी ने अपने गुरु की इच्छा को तथास्तु कहकर स्वीकार किया।** उसके बाद से वह अविद्या दूर करने के कार्यों में लग गये।

विद्या के स्रोत चार वेदों को उन्होंने प्राप्त कर उनकी परीक्षा की और अपने सभी सिद्धान्तों को वेदों पर आधारित किया। **वेद सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अनादि और नित्य स्वरूप वाले ईश्वर का प्रतिपादन करते हैं और स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना सहित सदाचरण से उसकी प्राप्ति बताते हैं।** ऋषि दयानन्द ने मत–मतान्तरों में विद्यमान अविद्या का खण्डन और सत्य व तर्कयुक्त वैदिक मान्यताओं का मण्डन आरम्भ किया। वह देश भर में घूमे। अपने समय के योग्य व ज्ञानी पुरुषों से मिले। सबसे उन्होंने मन्त्रणा की और वेदों के महत्त्व को समझाया। बहुत से लोगों ने महत्त्व को समझा परन्तु अपने हितों व स्वार्थों को छोड़ न सकने के कारण ऋषि दयानन्द से सहयोग न कर सके। ऋषि दयानन्द अपना उद्देश्य, कर्तव्य व लक्ष्य निर्धारित कर चुके थे। वह अपने मार्ग पर आगे बढ़ते रहे और देश व समाज को अविद्या के अन्धकार व गड्ढे से निकालने का प्रयत्न करते रहे। इसका परिणाम ही आर्यसमाज की स्थापना, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेद भाष्य आदि ग्रन्थों की रचना, मौखिक प्रचार सहित लोगों से शास्त्रीय वार्ता एवं शास्त्रार्थ आदि कार्य रहे। उन्होंने अन्धविश्वासों की समीक्षा कर उन्हें छोड़ने की प्रेरणा की और बाल विवाह, विधवाओं पर अत्याचार, छुआछूत, ऊँच–नीच, फलित ज्योतिष, जन्मना जातिवाद का पुरजोर विरोध व खण्डन किया। वह वेद व योग सहित आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के अध्ययन के आग्रही थे। इसके परिणाम से देश में जागृति उत्पन्न हुई। स्वामी दयानन्द ने ही स्त्रियों को उनके वेदाधिकार व समाज में उच्च गौरवमयी स्थिति को प्राप्त कराया। देश में ज्ञान–विज्ञान का जो प्रकाश हुआ एवं समाज का वर्तमान में जो आधुनिक स्वरूप बना है, उसकी नींव में ऋषि दयानन्द के विचार व कार्य ही हमें दृष्टिगोचर होते हैं। **देश की आजादी में भी उनके ही प्रयत्नों की देन है। देश की आजादी का विचार भी सर्वप्रथम उन्होंने ही अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से देश को दिया था।**

देश अपनी अविद्या, अन्धविश्वासों एवं मिथ्या व अनुचित सामाजिक परम्पराओं से विश्रृंखलित होकर पहले मुसलमानों का तथा बाद में ईसाई मतानुयायी अंग्रेजों का गुलाम बना। इन सभी ने देश का शोषण किया तथा आर्य–हिन्दू जाति पर अमानवीय अत्याचार किये। बड़ी भारी संख्या में हिन्दुओं का धर्मान्तरण व मतांतरण भी किया गया। आज देश में इन समुदायों के जो लोग दिखाई देते हैं वह सब धर्मान्तरण के कारण ही अस्तित्व में आये हैं। देश का सामाजिक स्वरूप इन कारणों से बिगड़ा और आर्य–हिन्दुओं को अनेक दुःखद विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। हम जब देश की आजादी की बात करते हैं तो हमें सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द के लिखे शब्द स्मरण हो आते हैं। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है **''कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता–माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।''** उन्होंने इसके आगे लिखा है **'परन्तु भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक्–पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। विना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय (देश की स्वतन्त्रता की प्राप्ति, अविद्या का नाश और समाजोन्नति) सिद्ध होना कठिन है। इसलिये जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरुषों (देशभक्त स्वतन्त्रता–प्रेमियों) का काम है।'**

ऋषि दयानन्द ने सन् 1883 में जब सत्यार्थप्रकाश में उपर्युक्त शब्दों को लिखा था तब भारत में कोई राजनीतिक या सामाजिक दल नहीं था। धार्मिक संस्थायें अनेक थी परन्तु उनमें किसी प्रकार का परस्पर सहयोग नहीं था। कोई धार्मिक संस्था अंग्रेजों के विरोध में नहीं थी। इसके विपरीत ब्रह्मसमाज जैसी संस्थायें तो अंग्रेजी राज्य को वरदान मानती थी। देश की जनता अज्ञान व अन्धविश्वासों में फँसी हुई थी। **ऐसी स्थिति में ऋषि दयानन्द ने उपर्युक्त शब्द लिखकर देशवासियों को आजादी प्राप्त करने की प्रेरणा की थी। सत्यार्थप्रकाश से इतर अपने अन्य ग्रन्थों में भी उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये प्रेरणा की है। ईश्वर से प्रार्थना करते हुए वह कहते हैं कि 'हमारे देश विदेशी**

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

गतांक से आगे ...

देश के इतिहास को समझें

● डॉ. स्वामी गुरुकुलानन्द कच्वाहारी

ऋषि दयानन्द ने स्वतंत्रता यज्ञ की अग्नि उस समय प्रज्ज्वलित की, जब गाँधी अपनी माता की अँगुली पकड़ चलना सीख रहे होंगे। नेहरू, पटेल तथा जिन्ना का जन्म भी नहीं हुआ था। स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाली कांग्रेस भी ऋषि के निर्वाण के 2 वर्ष 2 माह पश्चात् अस्तित्व में आई। कितना आकर्षण था स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व व शिक्षाओं में? सारा देश जागृत होकर संगठित हो गया। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले 85 प्रतिशत सेनानी तथा अधिकांश क्रांतिकारी किसी न किसी रूप में ऋषि से प्रभावित थे। सही अर्थों में 'स्वराज्य का पाठ दबे–कुचले, अशिक्षित एवं गुलाम भारतीयों को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही पढ़ाया। दुर्भाग्य! आज़ादी के बाद खोखली धर्मनिरपेक्षता के नाम पर शासकों ने स्वतंत्रता के उद्घोषक दयानन्द को ही भुला दिया।

सर सैयद अहमद खाँ 1857 की क्रांति के समय बिजनौर में कम्पनी के मुलाज़िम थे। वे कभी हिन्दू व मुसलमानों को अपनी 'दो आँखे' कहते थे, परन्तु धर्म के संकीर्ण दायरे से स्वयं को बचा नहीं पाये। उन्होंने ही सबसे पहले मुसलमानों से अंग्रेजों के साथ सहयोग की बात की, जिससे उन्हें सरकार से मदद मिलती रहे। सत्य तो यह है कि पाकिस्तान की बुनियाद रखने में सर सैयद अहमद खाँ की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। उन्होंने मुसलमानों में शिक्षा का प्रकाश फैलाने का प्रयत्न अवश्य किया, साथ ही हिन्दू–मुसलमानों के मध्य अलगाववाद का बीजारोपण भी किया, जिसे वक्त के साथ–साथ हवा–पानी मिलती रही। उनकी स्वामी दयानन्द सरस्वती से भेंट हुई किन्तु स्वतंत्रता के बारे में शायद ही उनमें सामंजस्य बना हो।

'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" के रचियता अल्लामा इकबाल के स्वर जिस तेज़ी से बदले उससे एक बात स्पष्ट होती है कि लिखने व व्यावहारिक जीवन में बड़ा अन्तर होता है। इकबाल हिन्दुस्तान के विभाजन के प्रबल पक्षकार बन गये। उनकी कविताओं में 'दारुल उलूम' की भावना दृष्टिगोचर होती है? जिस व्यक्ति ने हिन्दू–मुसलमानों के मध्य खाई पैदा की, उसका गीत हम क्यों गाएँ? मैं इसे दुर्भाग्य कहूँ या विवशता? ऐसे तआस्सुबी इकबाल का लिखा गीत आज भी स्वतन्त्र भारत में गाया जाता है।

अलगाव की भावना से ही 1906 में सर आगा खाँ तथा सुलीमुल्ला खाँ ने ढाका में मुस्लिम लीग को जन्म दिया। यद्यपि प्रारम्भ में लीग को विशेष सफलता नहीं मिली लेकिन मुसलमानों का मानसिक झुकाव कांग्रेस की अपेक्षा मुस्लिम लीग से बना रहा। मुहम्मद अली जिन्ना जैसे तेज़–तर्रार व नेतृत्व के धनी व्यक्ति ने मुसलमानों को एकजुट कर 'कायदे आजम' बने।

पाकिस्तान के जन्म के सम्बन्ध में 'फ्रीडम एट मिडनाइट' में लिखा है–"1933 में एक 40 वर्षीय स्नातक रहमत अली ने टाइप किये साढ़े चार पेज में इसका मसौदा बनाया। यह कार्य कैम्ब्रिज के हैम्बरस्टोन रोड़ के कॉटेज न. 3 में सम्पन्न हुआ। उसी में नये देश का नाम पाकिस्तान' यानी पवित्र भूमि सुझाया गया, जिसमें पंजाब, सिंधु कश्मीर, बलोचिस्तान को शामिल किया और कहा गया–"हिन्दू राष्ट्रीयता की सलीब पर हम खुदकुशी नहीं करेंगे।" 14 वर्ष पश्चात् 14 अगस्त 1947 की अर्द्धरात्रि को मुहम्मद अली जिन्ना ने इस असम्भव से लगने वाले कार्य को सम्भव कर दिखाया। के.के. अजीज के शब्दों में–

"Every exponent of separation from Sayyad Ahmad Khan to Jinnah, overstressed the negative facter and played down the positive one."

आचार्य कृपलानी ने अपनी आत्मकथा में गाँधी जी, अब्दुल गफ्फार खाँ तथा डॉ. राममनोहर लोहिया को छोड़ कर सभी को विभाजन का जिम्मेदार माना है।

भारत का इतिहास, जिस तरह से पश्चिमी विद्वान् मानते हैं, लिखना सम्भव ही नहीं है। हमारे यहाँ तो युगों–युगों से हज़ारों राजा–महाराजा होते रहे हैं, किस–किस का इतिहास लिखा जाए? रामायण, महाभारत व पुराणों में पर्याप्त इतिहास उपलब्ध हैं। महाराजा हरिश्चन्द्र की दानवीरता का वर्णन हमारे यहाँ है। राजा नल तथा उनकी पत्नी दमयन्ती का उल्लेख भी है। राजा शिवि की कथा तो लोगों को स्मरण रहती है। महाभारत के नायक कर्ण को शायद ही कोई भूलेगा। धर्मराज युधिष्ठिर की सत्यता हमेशा भारतीय समाज का मार्गदर्शन करती रही है। चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, हर्षवर्धन, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य ऐसे ही महान् राजाओं के अतिरिक्त ऋषियों के नाम भी हम लोग याद करते हैं। वशिष्ठ, विश्वामित्र, पाराशर, भारद्वाज गौतम आदि–आदि।

सृष्टि की उत्पत्ति भी एक इतिहास है जिसका वैदिक दर्शन में वैज्ञानिक वर्णन है। पृथ्वी की उत्पत्ति तथा मानव के जन्म की कालगणना भी हमारे ऋषियों ने की है। वेद के अनुसार– "परमात्मा, प्रकृति तथा आत्मा अनादि है।" बाईबिल में लिखा है– "ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था।" यानी संसार का कर्त्ता तो विद्यमान है, जल भी मौजूद था। इसका रसायनिक सूत्र H_2O है। स्पष्ट है कि हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन भी विद्यमान थी, यही प्रकृति है। बस, अन्तर केवल आत्मा का है। ईसाई तथा मुसलमान दोनों ही आदम–हव्वा से मानव की उत्पत्ति मानते हैं और दोनों को ईश्वर ने ही बनाया। ध्यान देने की बात यह है कि 'डूम्सडे' या 'कयामत' में न्याय होगा, मुर्दे कब्रों से जी उठेंगे, उन्हें अच्छे–बुरे का फल मिलेगा।

अच्छाई के साथ–साथ बुराई भी मानव–समाज में विद्यमान रहती है। ईश्वरीय सृष्टि में चाहे आदम–हव्वा हों या ब्रह्मा व उसके वशंज सब उच्चकोटि के ही थे। शैतान ने हव्वा को बहकाया और स्वर्ग से पृथ्वी पर आ गये। भारतीय परम्परा में आर्यों की जीवन–प्रणाली विशिष्ट प्रकार की थी। जिन लोगों ने इसका ठीक से पालन नहीं किया वे अनार्य कहलाये, न कि यहाँ के 'मूल निवासी' जैसा कि यूरोप के विद्वानों ने प्रचारित किया है।

विकासवाद की थ्योरी न केवल भ्रामक है बल्कि तथ्यहीन भी। मान भी लिया जाये कि एक अमीबा से ही सृष्टि का प्रारम्भ हुआ किन्तु अमीबा में प्राण कहाँ से आये? एक ही अमीबा से विभिन्न प्रकार के प्राणियों की उत्पत्ति कैसे हो गयी? यदि मानव बन्दर का ही विकसित रूप है तो शेर भी तो उसी अमीबा से उत्पन्न हुआ, वह मनुष्य के रूप में विकसित क्यों नहीं हुआ? सृष्टि की उत्पत्ति को लेकर भी अलग–अलग तर्क हैं। जो लोग यह मानते हैं कि मानव सृष्टि अब से 7–8 हज़ार साल पहले बनी है उनसे यह भी पूछना चाहिये कि इतने सालों में कोई बन्दर आदमी बना हो, इसका कोई उदाहरण उनके पास है? इसलिए इस थ्योरी में विश्वास कैसे किया जाये। वैदिक सिद्धान्त ही सत्य है। बिना कर्त्ता के रचना नहीं हो सकती है। कहीं न कहीं कोई रचनाकार अवश्य हैं, उसे चाहे किसी भी नाम से स्मरण कर लिया जाये। मानव की उत्पत्ति लाखों वर्ष पूर्व हुई है।

आधुनिक विज्ञान के इतिहास के पृष्ठों पर जब परमाणु के विखण्डन की कोई सोच भी नहीं रहा था उस समय बिना किसी प्रयोगशाला के, जिसका निवास धरती और सिर पर केवल आसमान की छत थी, उन स्वामी दयानन्द ने परमाणु के विभाजन की बात, 'ऋग्वेदादिभाष्य् भूमिका' में लिखी है। उनके विचार के बहुत साल बाद पता चला कि परमाणु के इलैक्ट्रोन है जो गतिशील रहते हैं। बाद में वैज्ञानिकों ने इनके अन्य भाग न्यूट्रोन और प्रोटोन की खोज की।

18वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति ब्रिटेन से प्रारम्भ हुई। जहाँ भी उनका शासन था बनाये रखने के लिए रेल, सड़क, डाक–तार की सुविधायें आवश्यक थीं। 1857 की क्रान्ति में तार प्रणाली ने अंग्रेज़ों को बड़ा सहारा दिया। दोनों ही विश्वयुद्धों में रेलमार्ग से ही भारत से देशी सैनिकों को विश्व के विभिन्न मोर्चों पर भेजना सम्भव हुआ। भारत के बंधुआ श्रमिकों के रक्त व पसीने से ही यहाँ की जमीन उपजाऊ बनी। फिजी की 'बा' घाटी में अंग्रेज़ों ने रेल लाइन गन्ने की ढुलाई के लिये बिछायी। साउथ अफ्रीका में भी रेल मार्ग ने खनिज पदार्थों का परिवहन सुगम बनाया। इन सुविधाओं का प्रयोग इन देशों के निवासियों ने भी अवश्य किया परन्तु इसका मुनाफा तो अंग्रेज़ों को ही गया।

यह बात निर्विवाद रूप में कही जा सकती है कि भारत आज जिस संसदीय प्रणाली के अंतर्गत चलता है इसका जनक ग्रेट ब्रिटेन है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के सभी नेता मेकॉले की शिक्षा की उपज थे जिसका परिणाम यह है कि आज भी भारत के सर्वोच्च न्यायालय का कार्य राजभाषा हिन्दी की बजाय अंग्रेज़ी में ही होता है। देश के नेतृत्व ने इस ओर अनदेखी की।

अंग्रेज़ी साम्राज्य में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों का सत्य प्रकाश विश्व में फैलाने में समक्ष हो सके। मुस्लिम शासनकाल में तो उन्हें या तो जीवित ही अग्नि में जला दिया अथवा जीभ व हाथ काटकर जीवन भर तड़पने के लिये छोड़ दिया जाता। हम भले ही अंग्रेज़ी शासन के अवगुण गिनायें लेकिन इस महान उपलब्धि को सदैव याद रखना होगा। पौराणिक, मुस्लिम व अंग्रेज़ी शासनकाल में जो भ्रांतियाँ वेद व आर्यों के सम्बन्ध में पैदा की गयीं उनका निराकरण वैज्ञानिक दयानन्द ने कर दिया और अब वेद इस सृष्टि के प्रारम्भिक ग्रंथ और आर्यन प्रथम मानव जाति ने।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सभी प्रणेता नाना साहेब, रानी लक्ष्मीबाई, अजीमुल्ला खाँ, बाबू कुँवर सिंह, तात्या टोपे, बेगम हज़रत महल आदि ने स्वामी दयानन्द से भेंट की। आखिर एक नग्न संन्यासी में ऐसा क्या था? घटनायें स्पष्ट करती हैं कि 1857 की क्रांति की धुरी दयानन्द थे। स्वतंत्रता की पावन गंगा उन्हीं के ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' से फूटी। जिस महामानव की फोटो सबसे पहले संसद में लगनी चाहिये थी उसे लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ी। जॉर्ज वाशिंगटन लिंकन की तरह उनका चित्र देश की करंसी पर छपना चाहिये उनकी किसी ने सुध नहीं ली। सत्य की इतनी बड़ी कीमत।

स्वतंत्रता संग्राम में, जैसा अपनी बुद्धि से मैंने विश्लेषित किया, बापू निष्पक्ष नहीं थे। वे एक ऐसे वटवृक्ष थे जिसके नीचे वही जीवित रहेगा जिस पर उनकी कृपा दृष्टि होगी। गाँधी जी यह भली–भाँति जानते थे कि देश का जनमानस उनके राम–स्मरण, अर्द्धनग्न लिबास तथा हिन्दी प्रेम से भावनात्मक रूप

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

एक अति महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रति हमारी बेरुखी और ग्रन्थ–लेखक की दयानन्द जी के प्रति आश्चर्यजनक श्रद्धा

● भावेश मेरजा

महामहोपाध्याय श्री पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक ने 1949 में **'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास'** नामक एक अनूठा ग्रन्थ लिखा। इसमें महर्षि दयानन्द जी के समस्त मुद्रित–अमुद्रित ग्रन्थों का परिचय, महत्त्व, विशिष्टताएँ तथा तत्सम्बन्धी इतिहास वर्णित किया गया है।

ऐसा लगता है कि इस प्रथम संस्करण में केवल 400–500 प्रतियाँ ही छपी थीं। उन दिनों में इसे प्रकाशित करने में 2000 रुपये का खर्च हुआ था और लेखक को इस कार्य में किसी व्यक्ति का आर्थिक सहयोग न मिलने पर इसे अपने व्यय पर छपाना पड़ा और उनके पास में धन न होने से इसके लिए उन्हें ऋण लेना पड़ा। प्रचारार्थ ग्रन्थ का मूल्य कम रखा गया था फिर भी 44 वर्ष में इसकी केवल 400 प्रतियाँ बिकीं। लेखक महोदय आर्थिक बोझ से दब गए, परन्तु ऋषि–ऋण से मुक्त होने के कारण वे अपने आपको पहले की अपेक्षा बहुत हल्का अनुभव करते थे। उन्हें इस बात का हर्ष था कि चिरकाल के परिश्रम से लिखा गया उनका यह ग्रन्थ किसी प्रकार प्रकाशित तो हो गया।

44 वर्ष पश्चात् लेखक ने इसी ग्रन्थ का संशोधित एवं परिवर्धित नया संस्करण अत्यन्त पुरुषार्थ से तैयार किया–इस प्रयोजन से कि महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो नये ऐतिहासिक तथ्य उन्हें ज्ञात हुए हैं वे सुरक्षित हो जाएँ। प्रथम संस्करण की बिक्री का अनुभव वे भूले नहीं थे। इसलिए इस दूसरे नये संस्करण की उन्होंने केवल 500 प्रतियाँ प्रकाशित कीं। लगभग 450 पृष्ठ का यह नया संस्करण 1983 में प्रकाशित हुआ। इसकी भूमिका में अनुभवी लेखक ने यह आशंका जताई है कि इस संस्करण की भी वही दशा होगी जो प्रथम संस्करण की हुई थी, परन्तु यह जानते हुए भी ऋषि–ऋण से उऋण होने की दृष्टि से उन्होंने इसे पुनः प्रकाशित किया और आशा व्यक्त की कि – **''यदि किन्हीं 2–4 इतिहासज्ञ व्यक्तियों को भी इससे सहायता प्राप्त होगी तो मैं अपने परिश्रम और धन–व्यय को सार्थक समझूँगा।''**

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,
जि. भरूच, गुजरात – 392015
मो. 9879528247

☞ पृष्ठ 02 का शेष

त्यागमयी देवियाँ

देवियों में विश्राम कर रही थी।

इससे भी अधिक अत्याचार इसी गुज्जर खाँ तहसील के ग्राम 'दुभेरन' में हुआ, जहाँ तेल के कड़ाहे गर्म किये गये और देवियों की गोदियों से नन्हें–नन्हें शिशु छीनकर कहा गया कि मुसलमान बनना स्वीकार करो, अन्यथा तुम्हारे बच्चे जलते तेल में फेंक दिये जायेंगे। जब माताओं ने ऐसे प्रस्ताव अस्वीकार कर दिये तो उन शिशुओं को जलते तेल में फेंककर भून डाला गया। फिर माताओं से कहा गया–या तो मुसलमान बनो या अपने बच्चों को खाओ। परन्तु पद्मिनी की अनुगामिनियों ने अपने प्राण उन्हीं जलते तेल के कड़ाहों में गिरकर त्याग दिये, पर अपने धर्म को बचा लिया।

ऐसी घटनाएँ एक–दो ग्रामों या नगरों में नहीं हुईं, लगभग हर ऐसी बस्ती में हुई हैं, जहाँ पाकिस्तानियों ने अपनी सभ्यता का परिचय दिया है। जिला रावलपिंडी के ग्राम पोठोहार में भी देवियों ने अपने धर्म की रक्षा करने हेतु कुएँ में छलाँग लगाकर प्राण त्याग दिये। ऐसी देवियों की संख्या 55 बतलाई जाती है।

जब 15 अगस्त 1947 को देश–विभाजन की घोषणा हो गई तो दिल्ली में स्वराज–प्राप्ति के जन–समारोह मनाए जाने लगे। जम्मू तथा कश्मीर की सुन्दर नगरियों का पाकिस्तानी दरिन्दे सर्वनाश करने लगे। मीरपुर, कोटली, भिम्बर, राजौरी, नौशहरा उजाड़ दिये, मुजफ्फराबाद, उड़ी, बारामूला और पुञ्छ के इलाकों में ऊधम मचा दिया। जेहलम नदी के दोनों तटों पर आबाद बारामूला की नगरी के कितने ही सुन्दर भवन जला डाले और देवियों को नग्न करके उनका जुलूस निकाला।

भिम्बर में जब यही अत्याचार आरम्भ हुआ तो कितनी ही देवियों ने कुओं में कूदकर प्राण दे दिये, और सहस्रों युवतियों ने विष खाकर प्राणों का अन्त कर दिया और राजौरी में तो वही दृश्य देखा गया जो साढ़े छः सौ वर्ष पूर्व चित्तौड़ में देखा गया था।

राजौरी रियासत जन्मू की एक बहुत सुन्दर नगरी थी। जब पाकिस्तानियों ने मार–धाड़ आरम्भ की तो ग्रामों से जनता राजौरी नगरी में आ गई थी। जब राजौरी पर 20–25 हज़ार राक्षसों ने आक्रमण किया तो राजौरी में 14 हज़ार की आबादी हो चुकी थी, परन्तु इनमें से अधिक संख्या देवियों और बच्चों की थी। आक्रमण होने पर राजौरी–निवासियों ने अपनी रक्षा का यत्न किया। कितने ही दिन वे लड़ते रहे और अत्याचारियों को नगर में घुसने नहीं दिया। परन्तु शक्ति कम होती चली गई। पाकिस्तानियों के पास युद्ध की पूरी सामग्री थी। यहाँ केवल शारीरिक बल था। जब नगरवासियों ने देखा कि अब अत्याचारियों को रोकना असम्भव हो रहा है तो उन्होंने देवियों से कह दिया कि अब जो इच्छा हो करो। राजौरी की देवियों ने एकत्र होकर पहले ही निश्चय कर रखा था कि ऐसा समय आने पर उनका क्या कर्त्तव्य होगा। उन्होंने नगर–भर की लकड़ियाँ, छतों के शहतीर, मकानों के द्वार आदि एकत्र करके रख लिये थे। जब पुरुषों की ओर से अन्तिम बात कह दी गई तो देवियों ने मिलकर प्रभु–भक्ति के गीत गाए। कहा जाता है कि लगभग तीन हज़ार देवियाँ चिताओं में बैठकर भस्म हो गईं और पाकिस्तानी लुटेरे राजौरी में घुसे तो यह चिताएँ जल रही थीं।

अब तो पाकिस्तानियों से भारतीय सरकार की बहादुर सेनाओं ने राजौरी नगर ले लिया है, परन्तु देखनेवालों ने देख लिया कि जिस सभ्यता ने पाकिस्तान को जन्म दिया है, वह साढ़े छः सौ वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी वही अत्याचार कराती है जो यवन–राज्य में कराती थी।

मीरपुर की देवियों ने पर्वत के शिखर से छलाँग लगाकर अपने प्राण त्याग दिये और मुजफ्फराबाद की सहस्रों युवतियों ने 'किशन गंगा' के अथाह जल की गोदी में उतरकर प्राण दे दिये, परन्तु अपने धर्म की रक्षा कर ली।

'कोटली' के स्त्री–पुरुषों ने जो वीरता दिखाई, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। 'कोटली' मीरपुर से चालीस मील दूर है। जब कोटली वालों ने सुना कि पाकिस्तानी लुटेरों ने मीरपुर लूट लिया है और सहस्रों देवियों को कैद करने के पश्चात् वह 'खुई रट्टा' होकर कोटली पहुँचने वाले हैं तो उन्होंने अपनी रक्षा का प्रयत्न आरम्भ किया। कुछ दिनों के पश्चात् पाकिस्तानी लुटेरों ने 'कोटली' पर आक्रमण कर दिया। इस नगरी के युवकों और युवतियों ने मोर्चे सँभाल ही रखे थे, लुटेरों के कितने ही सशस्त्र व्यक्ति मारे गए। इधर 'कोटली' के युवक भी मारे जाने लगे। यह युद्ध चालीस दिन जारी रहा, परन्तु 'कोटली' के स्त्री–पुरुषों ने लुटेरों को नगरी में प्रविष्ट नहीं होने दिया।

इन 40 दिनों में देवियों ने पुरुषों से बढ़कर वीरता, निडरता और सहनशीलता का परिचय दिया। इस नगरी की प्रभुभक्तिन बीबी भाग्यवन्ती ने देवियों को ऐसी सुन्दरता से संगठित किया कि पुरुष भी देखकर चकित रह गए। 'कोटली' के तमाम मोर्चों पर भोजन पहुँचाना, बन्दूकों में गोलियाँ और बारूद भरना तो इन देवियों का विशेष कार्य था। इसके अतिरिक्त कितने ही मोर्चे देवियों ने स्वयं भी सँभाल रखे थे। वे स्वयं गोलियाँ चलाती थीं और लुटेरों के मुँह मोड़ देती थीं। कोटली–निवासियों ने इन चालीस दिनों में भयंकर तप किया।

जब भारतीय सेना 'कोटली' पहुँची तो उसने देखा कि लुटेरे 'कोटली' पर चारों ओर से आक्रमण की तैयारियाँ कर रहे हैं। यही उचित समझा गया कि वहाँ से सबको निकालकर जम्मू भेज दिया जाये। कोटली की देवियों ने इस अवसर पर भी बड़े धैर्य और बुद्धिमत्ता से काम लिया और सब देवियाँ कोटली से निकल आईं।

जब आधुनिक काल की इन पद्मिनियों तथा वीरांगनाओं का इतिहास लिखा जायेगा तो एक स्वर से पढ़नेवाले कह उठेंगे –

क्या नहीं अबला कर सके, क्या नहीं सिन्धु समाय।
क्या नहीं पावक में जरे, काल काहे न खाय।।

शिक्षा –

सतीत्व की पवित्रता में ही नारी–जीवन की सफलता है।

मेरा मेरा कुछ नहीं, सब कुछ है तेरा।
क्या रखा दुनिया में, ये सब है झमेला।।

पहले हमको अपनी बुराइयाँ दूर करनी चाहिए। तभी हम दूसरों को कहने लायक होंगे।

इति

☞ पृष्ठ 07 का शेष

देश के इतिहास ...

से जुड़ गया है इसलिए उन्होंने सुभाष जैसे तेज़–तर्रार युवक को बढ़ने नहीं दिया और भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव की मौत पर मौनव्रत धारण कर लिया।

सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस के 1938 में सम्पन्न हरिपुर अधिवेशन में सर्वसम्मति से मात्र 41 वर्ष की आयु में अध्यक्ष चुने गये। गाँधी जी के लिये यह बात बेहद दर्दनाक थी, उनके 'गुलाब' को यह युवक पूरी तरह हाशिये पर खड़ा कर देगा। अगले वर्ष 1939 में सुभाष चंद्र बोस पुनः अध्यक्ष पद के लिये खड़े हो गये। गाँधी जी का उम्मीदवार बुरी तरह हारना ही था। निःसन्देह गाँधी जी की प्रतिक्रिया कटु होनी थी, इसे उन्होंने 'व्यक्तिगत हार' कहा।

'भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य और स्वतन्त्रता संग्राम' से साभार

प्राण व इन्द्रियों का झगड़ा

● श्रीमती मनीषा विमल

परमपिता परमात्मा की सृष्टि रचना में उनकी सर्वोत्तम सुन्दर कृति मनुष्य का शरीर है। ईश्वर ने मनुष्य को ही कर्म करने की शक्ति दी है। कर्म करने के लिए शरीर में इन्द्रियाँ दीं तथा उनको चेतन रखने के लिए प्राण दिये, सारी इन्द्रियाँ आँख, कान, नाक, मुख, त्वचा, हाथ, पैर, वाणी सभी इन्द्रियां अपना अपना कार्य सुचारु रूप से करने लगी। धीरे–धीरे उनमें अहं आ गया और एक दूसरे से अपने को श्रेष्ठ समझने लगी, इस तरह प्राण व इंद्रियों में विवाद छिड़ गया कि श्रेष्ठ कौन है, सभी अपने–अपने को बड़ा कहने लगे। तब इन्द्रियाँ व प्राण प्रजापति के पास पहुँचें और कहा भगवन हमें बताइये हम में से श्रेष्ठ कौन है, प्रजापति ने उत्तर दिया तुम सब एक–एक वर्ष के लिए एक–एक कर शरीर से बाहर चले जाओ, जिसके जाने से यह शरीर अत्यन्त घृणित दिखाई दें वही तुम सब में श्रेष्ठ है। सबने एक मत से स्वीकार कर लिया, सर्व प्रथम वाणी एक वर्ष के लिए शरीर छोड़ कर चली गई, एक वर्ष बाद वापिस आने पर सबसे पूछा मेरे बिना जीवन निर्वाह किस प्रकार हुआ, उन्होंने उत्तर दिया कि जिस प्रकार गूंगे प्राणों से श्वास लेते है, आँखों से देखते है, कानों से सुनते है, मन से विचार करते हैं, हाथ पैरों से कार्य करते है। ऐसे ही हम सब का निर्वाह हो गया, वाणी अपने महत्त्व व यथार्थता को समझ गई तथा पुनः शरीर में प्रविष्ट हो गई।

इसके बाद चक्षु शरीर से बाहर निकल गये, साल भर पश्चात् वापिस आये, इंद्रियों से पूछा, हमारे बिना कैसा रहा, सभी ने उत्तर दिया, जिस प्रकार अन्धे होने पर मनुष्य प्राणों से प्राण लेते हैं, वाणी से बोल लेते हैं, कानो से सुन लेते हैं, मन से विचार कर लेते हैं, स्पर्श से पहचान लेते हैं, ऐसे ही हम सब भी रहे। अब आँखों को भी अपनी वास्तविक स्थिति का आभास हो गया कि हमारे बिना भी काम ठीक प्रकार से चलता रहता है और वह भी यथावत् शरीर में प्रविष्ट हो गये। इसके पश्चात् श्रोत्र बाहर निकल गये और साल भर पश्चात् जब वापिस आये तो किसी की गतिविधि में कोई व्यवधान नहीं आया, बहरे व्यक्ति का सारा काम भी आँख, मन, हाथ, पैर की सहायता से चलता रहा। श्रोत्र भी अपनी स्थिति में वापिस आ गये। और शरीर में यथावत् अपने स्थान पर चले गए।

अब मन की बारी आई वह भी बाहर चला गया तथा एक वर्ष के बाद वापिस आया, तब उसे ज्ञात हुआ कि जिस प्रकार बालकों का काम बिना सोच–विचारे चलता रहता है वैसे ही शरीर का काम भी मन के बिना चल सकता है। अब प्राणों की बारी आई, प्राण बोला मैं भी अब चलता हूँ कुछ समय के लिए, किन्तु जैसे ही प्राण चलने को उद्यत हुआ सारी इद्रियाँ बेहाल होने लगी, उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी ने उनको उसी तरह उखाड़ दिया जिस तरह एक उत्तम घोड़ा दौड़ते हुए खूँटे को ही उखाड़ फेंके, सभी इंद्रियों को प्राण के महत्त्व का ज्ञान हो गया और सभी ने कहा, भगवान आप इस शरीर को छोड़ कर मत जाइये। तुम ही हम सब में श्रेष्ठ हो।

उसके बाद वाणी ने प्राण की महत्त्वता स्वीकार करते हुए कहा मैं तो केवल शब्द बोलने वाली हूँ आप तो उन शब्दों को बुलवाने वाले हो, मुझ वाणी में जान डालने वाले हो। इसके बाद श्रोत्र (कान) ने कहा मैं तो केवल शब्द सुनने वाला हूँ आप तो शब्दों का अधिष्ठाता शब्दों को जान डालने वाले हो, इसके बाद नेत्रों ने भी यही कहा कि हमें दिखाई देने की शक्ति देने वाले तो तुम ही हो, मन ने प्राण से कहा मैं तो विचार करने वाला हूँ किन्तु तुम तो विचारों को आधार देने वाले हो।

सभी ने एक स्वर में प्राण के महत्त्व को स्वीकार कर लिया इसीलिए सभी इन्द्रियों को भी प्राण के नाम से ही पुकारने लगे।

अब प्राण ने इन्द्रियों से कहा मेरा अन्न क्या होगा, इन्द्रियों ने स्वीकार किया कि जो कुछ भी कुत्ते से लेकर पक्षियों तक का अन्न है, भोज्य पदार्थ है वही तेरा भी अन्न होगा। पुनः उसने कहा मेरा वस्त्र क्या होगा, तब इन्द्रियों ने कहा जल ही तेरा वस्त्र होगा।

क्योंकि प्राण रक्षा के लिए अन्न और जल दोनों ही आवश्यक है, तब प्राण ने कहा मैं तुम सबकी रक्षा करूँगा। प्राण का अपान रूप अन्न को मुख द्वारा ग्रहण करता है तो वह सीधा पेट में ही जाता है, वहाँ से "समान" द्वारा रस में परिवर्तित होकर पूरे शरीर में संचरण करता है। इस तरह पूरे शरीर में प्राणों की शक्ति बनी रहती है, जल भी अन्न की तरह आवश्यक है शरीर की रक्षा के लिए।

कथासार–प्राण निष्काम भाव से शरीर में कार्य करता है और इन्द्रियाँ सकाम भाव से प्राण का अपना कोई स्वार्थ नहीं होता, किन्तु प्रत्येक इन्द्रियों का कोई न कोई स्वार्थ होता है, जैसे आँख रूप देखना चाहता है, कान शब्द सुनना चाहता है, वाणी बोलना चाहती है, त्वचा स्पर्श चाहती है। किन्तु प्राण निस्वार्थ भाव से दिन–रात चलता रहता है, प्राण गर्भ में भी इन्द्रियों के बनने से पहले ही अपना कार्य शुरू कर देता है, शरीर थक जाता है रात विश्राम करता है किन्तु प्राण बिना रुके बिना थके शरीर में घूमता ही रहता है क्योंकि प्राण के निकलते ही शरीर शव हो जाता है, इसीलिए प्राणों को बलिष्ठ बनाने के लिए प्राणायाम साधना करनी चाहिए, मनुष्य को चाहिए कि जिस तरह प्राण निःस्वार्थ सेवा देता है उसी तरह समाज में निःस्वार्थ भाव से सदैव कर्म करते रहना चाहिए।

2/25 आर्यवानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर हरिद्वार,
मो. 9760618132

☞ *पृष्ठ 06 का शेष*

देश की आज़ादी और ...

राजा न हों'। 'हम कभी परतन्त्र न हों' आदि। आर्यसमाज की सन् 1875 में स्थापना के बाद सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई। उन दिनों कॉंग्रेस का गठन अंग्रेजों का विरोध करने के लिये नहीं अपितु अपने लिये उनसे कुछ अधिकार प्राप्त कर उनके साथ सहयोग करने के लिये बनी थी। कालान्तर में इससे नये–नये नेता जुड़ते रहे और तब इसमें देश को अधिक अधिकार देने की बातें की जाने लगीं। देश को पूर्ण आजादी का निर्णय तो सन् 26–1–1930 में लिया गया था। यह भी एक तथ्य है कि कांग्रेस के अनुगामियों में सहयोग करने वाले लोगों में अधिकांश आर्यसमाज के अनुयायी ही थे। ऐसा माना जाता है कि 80 प्रतिशत आर्यसमाजी कांग्रेस के आजादी के आन्दोलन से जुड़े थे।

यह भी ज्ञातव्य है कि देश में नरम व गरम दो दलों ने आजादी के आन्दोलन में योगदान दिया है। गरम दल व क्रान्तिकारियों का प्रथम नेता पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा को माना जाता है। वह ऋषि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। वर्मा जी ने इंग्लैण्ड जाकर आजादी के लिये कार्य किया था। भारत से जाने वाले अनेक क्रान्तिकारी युवक पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित इण्डिया हाउस में रहते थे व उनसे छात्रवृत्ति प्राप्त करते थे। वीर सावरकर भी इनमें से एक थे। वीर सावरकर जी ने सन् 1857 को देश की आजादी का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहा था। उनका लिखा इस शीर्षक का ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं खोजपूर्ण होने सहित इतिहास के अनेक रहस्यों का अनावरण करता है। **सभी कान्तिकारियों का एक ही ध्येय था कि देश को अंग्रेजों की दास्ता से मुक्त कराना है।** यह लोग हिंसा का उत्तर हिंसा से देने में संकोच नहीं करते थे। कहावत भी है कि **'प्रेम तथा युद्ध में सब जायज है'। देश को मिली स्वतन्त्रता में देश के क्रान्तिकारियों का सर्वाधिक योगदान है।** देश की आजादी में इन लोगों को किसी प्रकार का पुरस्कार नहीं मिला जबकि अहिंसात्मक आन्दोलन में भाग लेने वाले सभी लोग अनेक पदों व पेंशन आदि से पुरस्कृत हुए। देश के 72 वर्ष के शासन से यह बात सामने आयी है कि अहिंसा से देश नहीं चल सकता। आजादी के बाद से भारत के चीन तथा पाकिस्तान से अनेक युद्ध हो चुके हैं। यदि हम अहिंसा की ही नीति पर चलते तो आज देश के अस्तित्व का बचना भी कठिन था। बंगला देश के लोगों ने भी गुरिल्ला युद्ध करके तथा भारत की सहायता से ही पाकिस्तान के जुल्मों से आजादी प्राप्त की थी। रामायण एवं महाभारत इतिहास के ग्रन्थ हैं। यह भी धर्म व देश रक्षा के लिये युद्ध व वर्तमान में आन्दोलन करने की प्रेरणा देते हैं। **अतः आर्यसमाज ने देश को आजाद कराने के लिये न केवल अपने ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश एवं आर्याभिविनय आदि के माध्यम से प्रेरणा की अपितु इसके अनुयायियों ने देश की गरम व नरम धारा से जुड़ कर देश को आजाद कराने में अन्य सभी संस्थाओं से कहीं अधिक योगदान दिया है। ऋषि दयानन्द के भक्त स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं शहीद भगतसिंह जी का परिवार आर्यसमाज के ही सक्रिय अनुयायी थे। सरदार पटेल भी आर्यसमाज के प्रशंसक थे। उन्होंने हैदराबाद में आर्यसमाज द्वारा किये गये आर्य सत्याग्रह को हैदराबाद रियासत के भारत में विलय को महत्त्वपूर्ण माना था और इसके लिए आर्यसमाज की प्रशंसा की थी।**

आर्यसमाज के संस्थापक एवं इसके अनुयायियों का देश की आजादी में प्रमुख योगदान है। आजादी की 72 वीं वर्षगाठ पर सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें। ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन:09412985121

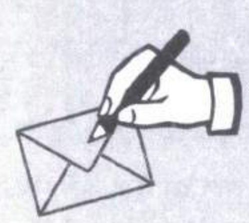

पत्र/कविता

श्री नगर (कश्मीर) में नया उदय

श्री नगर (कश्मीर) में धारा 370 को महामहिम राष्ट्रपति महोदय एवं लोकसभा, राज्यसभा में निरस्त करने पर नया सूर्य उदय हुआ है। बधाई।

अब कश्मीर घाटी में दशकों से बन्द पड़े सैकड़ों आर्य समाजों में यज्ञ प्रक्रिया आरम्भ होगी और वैदिक धर्म का पुर्ननिर्माण संभव होगा।

स्वामी दयानन्द, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महान संतों के प्रवचनों को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयास होंगे। यह सर्वविदित है कि लेखक 1977 में श्री नगर के लाल चौक पर स्थित आर्य समाज में दो रात्रि प्रवास कर चुका है। विश्वास है कि यह आर्य समाज पुनः अपनी विश्वसता को कायम करेगा।

देश के समस्त आर्य बन्धुओं से आग्रह है कि यथासम्भव कश्मीर के आर्य समाज के उत्थान में सहयोग प्रदान करें।

कृष्ण मोहन गोयल
बाजार कोट, अमरोहा
मो. 9927064104

****

अन्धी श्रद्धा त्यागकर समझ गाय का अर्थ

व्यर्थ बहा मत बावरे जल जीवन अनमोल।
बूँद-बूँद का रख गणित आँसू भरें कपोल।।

धरती माँ को मार मत होगा अन्न-निरन्न।
जग का जीवन काँच सा टूटेगा कर छन्न।।

धरती माँ है बावरे तू सन्तान अनन्य।
छीन नहीं मातृत्व को होगा पाप जघन्य।।

माँ स्वेच्छा से दे रही अपना जीवन-सार।
मार-मार कर छीन मत बलपूर्वक आहार।।

वसुन्धरा ने दे दिये रत्न अरूप-स्वरूप।
छीन न उसके रूप को धरती माँ शतरूप।।

बुद्धि-वृद्धि मस्तिष्क का करता त्वरित विकास।
पंचगव्य इस सृष्टि का है शाश्वत मधुमास।।

क्यों झेले बीमारियाँ खोकर आयुर्वेद।
प्राण बना ले गाय को चिन्ता रहे न खेद।।

अन्धी श्रद्धा त्याग कर समझ गाय का अर्थ।
युग है अर्थ प्रधान तो गैया सर्व समर्थ।।

बसते देवी-देवता ब्रह्मा-विष्णु-महेश।
ऋद्धि-सिद्धि है गाय में गोबर रचे गणेश।।

प्राण वायु से गाय की बढ़े स्वास्थ्य और शान्ति।
कान्ति क्रान्ति विश्रान्ति दे मारे जग की भ्रान्ति।।

डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी
ए-1/13-14 सै.-11
रोहिणी, दिल्ली-110085
मो. 09810835335

कश्मीर की यह ऐतिहासिक ईद

कश्मीर ने कांग्रेस तथा कई अन्य विपक्षी दलों को बड़ी दुविधा में डाल दिया है। इन दलों के कई प्रमुख नेता (कश्मीर के मामले में) खुलकर सरकार का समर्थन कर रहे हैं बल्कि कश्मीर के पूर्व महाराजा और सदरे-रियासत डॉ. कर्णसिंह ने भी अमित शाह के फैसले पर मुहर लगा दी है। मोदी सरकार ने पिछली सरकारों के अधूरे काम को पूरा किया है। तरह-तरह के प्रावधान करके धारा 370 को इतना पतला कर दिया गया था कि यह पता चलाना मुश्किल हो गया था कि वह दूध है या पानी है। आज इंदिरा का ताज़ मोदी के सिर पर रखना चाहिए था। देश के कई प्रांतों के कांग्रेसी नेता और कार्यकर्त्ता मुझसे पूछ रहे हैं कि हमारे नेतृत्व को क्या हो गया है? कश्मीर के सवाल पर डॉ. कर्णसिंह के सामने कांग्रेस की पूरी कार्यसमिति की राय दो कौड़ी के बराबर भी नहीं है। देश की लगभग सभी सामान्य जनता इस कदम का स्वागत कर रही है।

कश्मीर के सवाल पर नरेंद्र मोदी का पूरा भाषण कल मैंने कार में यात्रा करते-करते सुना। मुझे लगा कि मोदी में एक राष्ट्र-नेता का सच्चा स्वरूप विकसित हो रहा है। धारा 370 और 35ए के विरुद्ध जितने भी तर्क मैंने पिछले एक माह में सूत्र रूप में दिए थे, मोदी ने विस्तार से उनकी व्याख्या की और ठोस उदाहरण भी दिए। उन्होंने विपक्ष या कश्मीर की जनता पर शब्द-बाण नहीं बरसाए बल्कि उनके घावों पर मरहम लगाया। भारत-जैसे विशाल और लोकतांत्रिक देश के नेता के लिए यही शोभनीय है। मेरी अपनी राय यह है कि सरकार के इस फैसले से कश्मीर के कुछ ठेकेदार नेताओं का नुकसान ज़रूर होगा लेकिन कश्मीर की जनता का फायदा ही फायदा है। उन्हें वे सब अधिकार मिलेंगे, जो प्रत्येक भारतीय नागरिक को मिले हुए हैं। वह शीघ्र ही पूर्ण राज्य भी बनेगा और उसकी कश्मीरियत की भी रक्षा होगी। बस बिचैलियों (नेताओं) की लूट बंद हो जाएगी। आतंकवादियों के हौंसले पस्त होंगे। कश्मीरी नेताओं को अब अखिल भारतीय नेतृत्व के मौके आसानी से मिलेंगे। इस वर्ष की कश्मीर की आज़ादी की ईद है। इस ईद पर कश्मीर सामंतवाद, संप्रदायवाद, आतंकवाद और भ्रष्ट नेताओं के चंगुल से आज़ाद हुआ है।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmail.com

****

गुणकारी आम

आयुर्वेदिक मत – कच्चा फल, अम्ल रस, लघु रक्ष गुण-शीत वीर्य तथा कटु विपाक होता है। यह त्रिदोष कारक है। पका फल, मधुर रस, गुण स्निग्ध, गुण-शीत वीर्य मधुर विपाक होता है। यह वात पित्त शामक होता है।

आम की छाल, पत्ते, फूल और गुठली कफ पित्त शामक होते हैं। इनका बाह्य प्रयोग रक्त शोधक और व्रण रोचक होता है। यह स्तम्भन करते हैं। कच्चा फल पाचन दाह प्रशामक है और लू लगने पर दिया जाता है। कच्चा फल रक्त पित्त प्रकुपित करता है यह रोचन और दीपन होता है।

पका फल, स्नेह अनुलोमन, सारक तद्य वृस्य शोभित स्थापन वल्य वर्ष्म और वृहण है। आम के पत्ते छदि (कै) दूर करते हैं गुठली वुमिध्न गर्भाशय शोथ हर प्रमेह एवं मूत्र संग्रहरणीय कार्य करती है।

आधुनिक मत – विश्लेषण करने पर कच्चे फल में पोटाश साइट्रिक एसिड, मौलिक एसिड प्राप्त हुए हैं। पके फल में कार्बन बाइ सल्फाइड वैंजीन, गैलिक एसिड और साइट्रिक एसिड मिले हैं। आम के फल में विटामिन सी और ए होता है। इसकी छाल ट्रनिन और इसकी गुठली में टैनिक एवं गौलिक एसिड प्राप्त हुए हैं। पके आम में पीले रंग के उपरान्त क्लोरोफिल थोड़ा सा मौलिक एसिड और गोद जैसा पदार्थ है। पका आम जठर को मृदु बनाने वाला-मूमल और पौष्टिक है मीठे आम के रस में विटामिन ए और सी दोनों प्रमुख मात्रा में पाये जाते है। विटामिन ए जंतु नाशक तथा विटामिन सी चर्म रोग नाशक कच्चे आम में पोटाश टाईट्रिक, साइट्रिक और मौलिक एसिड है।

खट्टे आम खाना लाभप्रद नहीं है क्योंकि इसमें मेदाग्नि-विषम ज्वर रक्त सम्बन्धी रोग कब्ज, पेट के रोग, नेत्र के रोग होते हैं।

डॉ. आर.एन. शोरी का कहना है कि कच्चा आम स्कवार्ड रोग दूर करता है।

कर्नल चोपड़ा – इस फल को विरेचक अधिक पेशाब का होना मानते हैं। यह बहते खून को रोकने वाला। इसके पत्ते बिच्छू के काटने पर लाभ करते हैं।

डॉ. नाडकरनी के अनुसार भुने हुए आम के गूदे में शक्कर डाल कर तैयार की हुई चटनी हैजे और प्लेग के रोग में प्रयोग करने पर लाभदायक होती है। इसके छिलके सहित रस निकालकर डिपथीरया और कंठमाला में देने से लाभ होता है।

हरिश्चन्द्र आर्य
अमरोहा, (उत्तर प्रदेश)

****

अलवर में गांधी जी के 150वें जयन्ती वर्ष पर कार्यक्रम आयोजित

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 150वें जयंती वर्ष के अवसर पर वैदिक विद्या मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में 'गाँधी जी की जीवन यात्रा' पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में 46 छात्राओं ने भाग लिया छात्राओं ने रंगोली के माध्यम से गाँधी जी की जीवन यात्रा को प्रदर्शित किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने की, विद्यालय समिति के मंत्री श्री प्रदीप कुमार आर्य ने भी सभी अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रम राज्य मंत्री श्री टीकाराम जूली थे उन्होंने छात्राओं द्वारा बनाई गई रंगोली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की तथा उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताऐं होती रहनी चाहिए जिससे समाज को उनके जीवन से प्रेरणा मिल सके। विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने गाँधी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री गोपी चन्द शर्मा समाजसेवी, नरेन्द्र मीणा नेता प्रतिपक्ष थे।

प्रतियोगिता को तीन भागों में विभाजित कर के प्रथम एवं द्वितीय आने वाले प्रतिभागियों को प्रथम स्थान पर रहने को 500/– रुपये एवं द्वितीय को 250/– रुपये पुरस्कार दिया गया।

एल.आर.एस. डी.ए.वी. अबोहर की छात्राएँ 10 दिवसीय एन.सी.सी. ट्रेनिंग कैंप में सम्मिलित

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर की 22 छात्राओं ने शारीरिक शिक्षिका श्रीमती पूनम जाखड़ के नेतृत्व में 10 दिवसीय एन.सी.सी. ट्रेनिंग कैंप का आयोजन एनसीसी एकेडमी मलौट में किया गया जिसमें 400 कैडेट्स ने भाग लिया।

शिविर का शुभारंभ कमांडिंग ऑफिसर स. रविंद्र सिंह भट्टी द्वारा कैडेट्स को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए व उनकी हौसला अफजाई करते हुए किया गया। इस दौरान कैडेट्स को एन सी सी के लाभों से भी अवगत करवाया गया।

ट्रेनिंग के दौरान कैडेट्स को ट्रेनिंग की हर प्रक्रिया से गुजारा गया व हर परिस्थिति और मुसीबत का सामना करने के लिए उनको परिपक्व किया गया।

इस दौरान आयोजित की गई अलग–अलग प्रतियोगिताओं में विद्यालय के कैडेट्स ने कई पुरस्कार बटोरे। डी.ए.वी. स्कूल ने ग्रुप सॉन्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ग्रुप डांस में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

शिविर के दौरान हैड क्वार्टर लुधियाना से पधारे ब्रिगेडियर भारती के द्वारा शिविर का निरीक्षण किया गया व स्कूल कैडेट्स की प्रभारी श्रीमती पूनम जाखड़ को एनसीसी कैप पहना कर सम्मानित किया गया। विद्यालय में पधारने पर प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में प्रिंसिपल श्रीमती स्मिता शर्मा द्वारा सभी कैडेट्स को सम्मानित किया।

डी.ए.वी. हजारीबाग में वन महोत्सव सम्पन्न

पूर्वी वन–प्रमण्डल एवं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल हजारीबाग के संयुक्त तत्त्वावधान में डी.ए.वी. स्कूल परिसर में 70वाँ वन–महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। वन महोत्सव का शुभारंभ पर्यावरण की शुद्धि के निमित्त दैनिक यज्ञ के साथ हुई जिसमें संस्कृत शिक्षक नित्यानंद पाण्डेय एवं बलदेव पाण्डेय ने यज्ञ संपन्न किया। इस अवसर सदर विधायक मनीष जायसवाल, बैंक ऑफ इण्डिया के जोनल मैनेजर रमेश कुमार बेहरा, वन–संरक्षक अजीत कुमार सिंह, पर्यावरण विद् डॉ. सत्यप्रकाश, स्टेट वाइल्ड लाइफ के मेंबर सुरेंद्र कुमार सिंह एवं स्कूल वाइस चेयरमैन दिनेश खण्डेलवाल ने परिसर में

पौधे लगाए तथा छात्र–छात्राओं के बीच पौधे वितरित किए।

वन–महोत्सव समारोह में सीनियर शाखा के बच्चों ने 'बूँद बूँद पानी' स्किट के मंचन के द्वारा जल–संचय का संदेश दिया वही जूनियर शाखा के बच्चों ने 'सेव ट्री सेव द अर्थ' नाटक के माध्यम से पेड़ों को बचाने की सीख दी।

मुख्य अतिथि मनीष जायसवाल ने कहा कि 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की तरह 'वृक्ष लगाओ, वृक्ष बचाओ' आंदोलन को भी जन–आंदोलन बनाने की जरूरत है।

विशिष्ट अतिथि वन–संरक्षक अजीत कुमार सिंह ने कहा कि जल–संकट के साथ–साथ प्रदूषण जैसी जानलेवा समस्या का एकमात्र निदान अधिक से अधिक पेड़ लगाना है।

स्कूल के प्राचार्य अशोक कुमार ने कहा कि हाल के दिनों में बारिश होने पर पौधारोपण के लिए बच्चे काफी उत्साहित हैं।

अपने धन्यवाद ज्ञापन में डीएफओ पूर्वी मण्डल, सुश्री स्मिता पंकज ने पौधारोपण कार्यक्रम में बच्चों की सहभागिता, पोस्टरमेकिंग एवं अन्य गतिविधियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. आलमपुर ...

इसके अतिरिक्त श्री सुरेन्द्र राणा (खण्ड प्राथमिक शिक्षा अधिकारी), श्री बिक्रम सिंह, आचार्य श्री श्रवण जी, आचार्य श्री धर्मवीर मुमुक्षु जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

आचार्य श्री धर्मवीर मुमुक्षु जी ने बौद्धिक विकास में वैदिक चेतना के समावेश का आहवान् किया। इसके साथ ही सुदृढ़ व्यक्तित्व निर्माण की युक्तियां सुझाईं। आचार्य श्री श्रवण जी ने विद्यार्थियों को योगाभ्यास के द्वारा अपने शरीर व मन को एकाग्र करने की युक्ति बताई।

शिविर के समापन पर आर्य श्रेष्ठ श्री सत्यपाल आर्य जी, श्री चैतन्य मुनि जी में छात्रों को शुभविचार देने के लिए आमंत्रित किए गए। मुख्य अतिथि श्री चैतन्य मुनि जी ने धर्म के लक्षण, यज्ञ का महत्व, कर्म की परिभाषा और वेद परिचय आदि विषयों को अत्यन्त सरल शैली में बच्चों तक पहुँचाया। माता श्रीमति यति सत्यप्रिया जी ने परमात्मा की स्तुति करते हुए भजन गाए। श्री सत्यपाल जी ने बच्चों को समाजिक व्यवहार के विषय में बताया। सांयकाल योग, संध्या स्वावलम्बन का प्रयास कराया गया। विशिष्ट अतिथि श्री सत्यपाल आर्य जी ने शिविरार्थियों को सीखी गई बातों का अपने जीवन में अनुसरण करने की प्रेरणा दी।

डी.ए.वी. आलमपुर के प्रधानाचार्य श्री बिक्रम सिंह ने इस शिविर के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर सभी को बधाई दी।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 28/29-08-2019

डी.ए.वी थाने (मुम्बई) में मनाया गया रक्षाबंधन एवं संस्कृत दिवस

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, थाने में प्रत्येक वर्ष की तरह इस साल भी 14 अगस्त को श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबंधन और संस्कृत दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः कालीन प्रार्थना सभा संस्कृत में आयोजित की गई। संस्कृतभाषा के महत्त्व के ऊपर एक छात्रा ने भाषण के रूप में अपने विचार अभिव्यक्त किये। साथ ही स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक संस्कृत देशभक्ति गीत भी छात्रों द्वारा गाया गया। रक्षा बंधन की शुभकामना भी छात्रों को दी गई।

प्रातःकालीन प्रार्थना सभा के बाद कक्षाओं में संस्कृतश्लोकोच्चारण करवाया गया। संस्कृत एवं संस्कृति के बारे में मुख्य बातों की जानकारी कक्षा में दी गई। इसी दिन विद्यालय में रक्षा बंधन का भी उत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। एक ओर जहाँ छोटी कक्षाओं की छात्राओं ने भाईयों के हाथों में राखी बाँधी वही स्टूडेन्ट काँसिल के सदस्यों ने वृक्ष को राखी बाँधकर पर्यावरण से हमारे गहरे नाते को स्वीकार किया और सदैव वृक्षों के संरक्षण का संकल्प भी लिया।

प्रधानाचार्या सिम्मी जुनेजा ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि–हमें विषयों के सामान्य अर्थों की ओर ही केवल ध्यान नहीं देना चाहिए अपितु गूढ अर्थों को भी समझने का प्रयास करना चाहिए। जैसे इस रक्षा सूत्र को बाँधकर भाई बहनों की सुरक्षा का वचन लेते हैं, वैसे ही वृक्ष बन्धन करते हुए हमें वृक्षों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। बिना वृक्षसंरक्षण के हमारा कोई भी पर्व हमें दीर्घायु बनाने में सहायक नहीं हो सकता। अतः अपने भाई बहनों के लिए इस रक्षाबंधन पर यह अनमोल तौफा दें अपने देश के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करें–वृक्ष लगाएँ और साथ ही उन देशभक्तों के लम्बी उम्र की कामना करें जो देश की सरहदों पर जान हथेली पर लिए खड़े हैं। सही मायने में यही सच्चा रक्षासूत्र होगा।

डी.ए.वी. राजाम (आंध्र प्रदेश) में स्वतंत्रता दिवस आयोजित

जी.एम.आर. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजाम में स्वतंत्रता दिवस धूम–धाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि जी.एम.आर.वी. फौंडेशन के सी.ई.ओ. कर्नल राजेंद्र प्रसाद द्वारा राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। तदुपरांत छात्रों के द्वारा प्रभावपूर्ण ढंग से भाषण, गीत, नृत्य का प्रदर्शन किया गया। रामायण में सीतापहरण की घटना को भारत माता की परतंत्रता से जोड़कर रोमांचित नृत्य प्रदर्शन किया गया है। इसके साथ–साथ एक सौ बीस छात्रों से स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानियों की वीर गाथाओं पर नृत्य नाटिका का प्रस्तुत की गई।

इन रोमांचित कार्यक्रमों को देखकर मुख्य अतिथि ने अपने हर्षोल्लास व्यक्त करते हुए प्रधानाचार्य के.वी.आर. के प्रसाद की, अध्यापकों और छात्रों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने छात्रों को संदेश देते हुए कहा, हम गाँधी जी और भगतसिंह जैसे महान और वीर लोगों की संतान हैं। वह संयम और वीरता हमारे अंदर रहती हैं। उन नैतिक गुणों को हमें अपने पूर्वजों से अपनाकर अगली पीढ़ी तक ले जाना चाहिए।" अंत में स्कूल की भिन्न गतिविधियों में जीत गए छात्रों को इनाम दिए गए।

सोहन लाल डी.ए.वी. अम्बाला में प्राध्यापकों के लिए छात्र कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण विकास परिषद के तत्त्वावधान में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा पंच दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम चलाया गया जिसमें सुश्री दिव्या छाबड़ा ने रिर्सोस परसन का कार्य किया। इस कार्यक्रम में 26 प्राध्यापकों ने सीखा कि छात्राध्यापकों एवं स्कूली छात्रों के कौशलों का विकास किस प्रकार किया जा सकता है।

सनातन धर्म महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एस. राणा मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुए। सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने भी सभी महमानों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया और कहा कि अध्यापकों के कौशलों का विकास समाज के अन्य वर्गों के कौशल विकास में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। डॉ. नीलम लूथरा ने भी कौशल विकास पर केन्द्रीय सरकार के कार्यों की चर्चा की। डॉ. सुषमा गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों का प्रोत्साहन किया और सब का धन्यवाद किया।

इस कार्यक्रम में उल्लेखनीय बात यह थी कि इसमें प्रोग्राम से पहले ही इसकी रूप रेखा तैयार कर ली जाती है बच्चों को क्या सिखाना है इस पर पहले चर्चा करके क्रियाकलापों में निखार लाया जाता है। बेकार पड़े सामान का उपयोग कैसे किया जाए, बुके बनाना, फूल बनाना, बैंक के फार्म भरना इत्यादि सिखाया गया।

समापन समारोह में प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने पूरे समूह को सम्बोधित किया, कई प्रतिभागियों ने कार्यक्रम पर अपनी फीड बैक दी और अन्त में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**